Chapter-4

चतुर्थ अध्याय

प्रमुख कवि और कृतियाँ

पूर्ववर्ती विवेचन में हम निर्देश कर चुके हैं कि इस वीर काव्य धारा के सम्यक मूल्यांकन के लिए प्रतिनिधि कवियों और उनकी कृतियों का सम्यक मूल्यांकन आवश्यक है. काव्य कवि की आत्माभिव्यंजना का मूल साधन है. वास्तव में काव्य के माध्यम से कवि अपने को ही अभिव्यक्त करता है. कवि जीवन की परिस्थितियाँ, उसकी वंश परम्परा, प्राचीन संस्कार, रहन-सहन उसकी शैक्षणिक योग्यता, उसका अध्ययन, मनन, चिन्तन, अनुभव आदि उसकी काव्य चेतना पर व्यापक प्रभाव डालते हैं. किसी कवि के जीवन एवं उसके परिवेश के परिज्ञान के बिना उसकी साहित्यिक कृतियों का निष्पक्ष मूल्यांकन संभव नहीं. अस्तु आधुनिक हिन्दी के वीर काव्यों का विवेचन करने से पूर्व उनके रचयिताओं का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय अप्रासंगिक न होगा.

प्रमुख कवि और उनके काव्य इस वर्ग के अंतर्गत मुख्यतः मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्यामलाल गुप्त पार्षद, सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन, गुरुभक्त सिंह भक्त, श्यामनारायण पाण्डेय, मलखान सिंह " सिसौदिया, वियोगी हरि , श्री कृष्ण सरल, आनन्द कुमार, विश्वनाथ पाठक, जीवन शुक्ल, श्याम नारायण प्रसाद, हरदयाल सिंह, लक्ष्मीनारायण मिश्र प्रभात, मोहनलाल महतो वियोगी, कुँवर चन्द्रप्रकाश, द्वारिका प्रसाद मिश्र आदि कवियों तथा उनकी कृतियों का निर्देश किया जा चुका है. इस काव्यधारा के कवियों का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है. ...

1. वे कवि जो छायावादी युग (सन् 1920) से लेकर सन् 1965 तक लिखते आ रहे हैं..

   क. मैथिलीशरण गुप्त.
   ख. सूर्यकान्त त्रिपाठी " निराला "
   ग. माखनलाल चतुर्वेदी.

घ. बालकृष्ण शर्मा " नवीन "

ङ. मोहनलाल द्विवेदी.

च. श्यामलाल गुप्त " पार्षद "

छ. रामधारी सिंह"दिनकर "

इन कवियों के विषय में यह उल्लेखनीय है कि ये सभी कवि वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं और इन्हें व्यापक युग फलक के कवि कहा जा सकता है ।

2. वे कवि जो केवल छायावादी युग के हैं ...

क. जयशंकर प्रसाद.

ख. सुभद्रा कुमारी चौहान

ग. वियोगी हरि.

छ. गुरुभक्त सिंह भक्त.

उपर्युक्त कवियों में से गुरुभक्त सिंह भक्त प्रगतिवादी युग में भी कलम चलाते रहे हैं.

3. प्रगतिवाद युग के कवि..

क. शिव मंगल सिंह " सुमन "

ख. श्याम नारायण पाण्डेय

ग. मलखान सिंह सिसौदिया.

घ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह

ङ. द्वारिका प्रसाद मिश्र.

च. मोहनलाल महतो वियोगी.

द्वारिका प्रसाद मिश्र एवं मोहनलाल महतो वियोगी के अतिरिक्त सभी कवि प्रयोगवाद युग में भी रचना करते रहे हैं.

4. प्रयोगवाद युग के कवि.

क. श्री कृष्ण सरल.
ख. आनन्दकुमार.
ग. विश्वनाथ पाठक
घ. जीवन शुक्ल.
ङ. श्याम नारायण प्रसाद.
च. हरदयाल सिंह.
छ. लक्ष्मी नारायण मिश्र.
ज. केदारनाथ मिश्र प्रभात.
झ. जगन्नाथ प्रसाद " मिलिंद.
ञ. लक्ष्मी नारायण कुशवाहा.

1. व्यापक युग -फलक के कवि और उनकी कृतियाँ

जैसा कि पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी तथा दिनकर जैसे कवि एक नहीं अनेक युग खण्डों में राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर काव्य रचनाएँ करते रहे. इनकी काव्य चेतना प्रारंभ में राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण से जीवन रस ग्रहण करके अतीत के गौरवमय पृष्ठों के उद्घाटन में प्रवृत्त रही और परवर्ती युगों की काव्य चेतना का एक सीमा तक उपयोग करके भाव धारा में मूलतः वही रही जिसपर यहाँ क्रमशः विचार किया जा रहा है. इस कोटि के कवियों में सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त आते हैं.

मैथिलीशरण गुप्त

भारतीय संस्कृति के पुजारी, भारत-भारती के अमर गायक, मानवता के अग्रदूत, हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक, गांधीवादी सिद्धान्तों के

प्रबल प्रचारक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई0 में चिरगाँव जिला झांसी के वैश्य परिवार में हुआ. इनके पिता का नाम सेठ रामचरण थे. गुप्त जी की शिक्षा दीक्षा घर पर ही हुई. मुंशी अजमेरी से इन्होंने विद्याध्ययन किया. गुप्त जी का रहन- सहन एवं वेशभूषा अत्यन्त सादी थी. सन् 1941 में खादी ग्रहण करने के उपरान्त इन्होंने पगड़ी का परित्याग कर गांधी टोपी पहन ली. गुप्तजी के गंभीर, भावुक, दृढ़ आत्म विश्वासी, कर्तव्य निष्ठ व्यक्तित्व की छाप उनकी रचनाओं में मिलती है.

गुप्तजी केवल कवि ही नहीं देशभक्त भी थे. इन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष में सक्रिय रूप से योगदान दिया, और इसके लिए जेल भी गये. भारत छोड़ो आंदोलन के समय गुप्त रूप से काम करने वाले लोगों को खतरे की परवाह किये बिना आश्रय दिया. इसमें कोई संदेह नहीं कि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी भारतीय साहित्य के महान स्रष्टा हैं. ये कवि ही नहीं कविता के नये रूपों के प्रवर्तक भी थे. इन्होंने पद्य द्वारा हिन्दी भाषा की अतुलनीय सेवा की और साथ ही साथ हमारी पुरानी गाथाओं का हमें स्मरण कराया. इनका निधन सन् 1964 ई0 में हो गया. लगभग पचास वर्षों तक राष्ट्र और राष्ट्र भाषा की अनथक सेवा कर ऐसे साहित्य का निर्माण किया जो युग सम्मत होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से देश और काल का अतिक्रमण कर अमर वाणी के रूप में स्वीकार किया जायेगा. इनकी चालीस एवं 6 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हैं. शेष रचनाएँ साहित्यिक विधा के अनुसार इस प्रकार है..

विवेच्य काल से पूर्व आनेवाली कवि की रचनायें हैं रंग में भंग [संवत् 1966], जयद्रथ वध [1967], शकुन्तला [1971], किसान [1972], तिलोत्तमा [सं. 1972], चन्द्रहास [सं. 1973], भारत भारती [सं. 1969],,पत्रावली [सं. 1972], विरहणी ब्रजांगना [अनुवाद ग्रंथ सं. 1971], प्लासी का युद्ध [अनु. सं. 1977].

विवेच्य काल में आने वाली कवि की रचनायें हैं...

पंचवटी [सं. 1982], हिन्दू [सं. 1984], शक्ति [सं. 1984], सैरन्ध्री [सं. 1984], वन वैभव [सं. 1984], सिद्धराज [1993], नहुष [1997], अर्जन और विसर्जन [सं. 1999], काबा और कर्बला [सं. 1999], अजित [सं. 2003], हिडिम्बा [सं. 2007], विष्णुप्रिया [सं. 2014], साकेत [सन् 1932], जयभारत [सं. 2009], अनघ [सं. 1982], यशोधरा [सं. 1989], स्वदेश संगीत [सं. 1982], झंकार [सं. 1926], कुणाल गीत [सं. 1999], पृथ्वीपुत्र [सं.2007], अंजलि और अर्घ्य [सं. 2007], द्वापर [सं. 1993], वीरांगना [अनु. ग्रं. 1984], मेघनाद बध [अनु. ग्रंथ 1984], स्वप्न वासवदत्ता [सं. 1988], रूबाइयात उमर खय्याम [सं. 1986].

उपर्युक्त रचनाओं में वीर रस की रचनायें शक्ति, विकट भट, सिद्धराज, मंगलघट एवं जयभारत हैं एवं राष्ट्रीय चेतना की रचनायें हिन्दू, साकेत, स्वदेश संगीत हैं. साकेत में वीर रस की आंशिक विवृत्ति हुई है. यहाँ केवल वीर रस की रचनायें विवेचन के लिए ली जा रही है. विवेच्य काल में कवि ने 23 ग्रंथ दिये और चार अनुवाद ग्रंथ हैं. इन 23 ग्रंथों में केवल पाँच रचनायें ही वीर रस कही जा सकती हैं जो संख्या में अति अल्प हैं. इसलिए वीर रस युक्त ग्रंथों की संख्या देखते हुए हम कह सकते हैं कि गुप्त जी मुख्यतः वीर रस के कवि न होकर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना के कवि हैं.

शक्ति =-

यह देव दानव संग्राम से संबंधित पौराणिक घटना पर आधारित एक खण्ड काव्य है. शक्ति के नाम पर ही काव्य का नामकरण किया गया है. क्योंकि उसका काव्य में सर्वोत्तम स्थान है. शक्ति ही काव्य का प्रमुख पात्र है. इसमें आद्यंत रण चर्चा है अतः वीर रस के सुष्ठु चित्रण की आशा कर

सकते हैं. प्रस्तुत काव्य के समान वीर दर्पपूर्ण उक्तियाँ एवं ऊर्जस्वित भावना गुप्त जी के कृतित्व के मध्यकाल में अन्यत्र दुर्लभ हैं. काव्य रूप के दृष्टिकोण से यह खण्डकाव्य है जिसका मूल्यांकन परवर्ती अध्याय का विषय है.

विकट भट -

गुप्तजी की यह प्रथम अतुकान्त काव्य रचना है. इसका कथानक राजपूत इतिहास से लिया गया है जो कि जोधपुर राज की ऐतिहासिक घटना पर आधारित है. कथा का विकास स्वभाविक है जिसमें राजपूती आन, उनके दर्प, अभिमान आदि का अच्छा वर्णन कवि ने देवीसिंह, सबल-सिंह एवं सवाई सिंह के माध्यम से किया है. इसमें वीर दर्पपूर्ण व्यक्तित्व के अनेक चित्र उपस्थित हुए हैं. यह वीर काव्य की श्रृंखला में श्रीवृद्धि करने का महत्वपूर्ण प्रयास है जिसका काव्यगत मूल्यांकन आगे किया जायेगा.

स्वदेश संगीत

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का यह संग्रह " भारत-भारती " की कोटि में आता है. गुप्त भारतवासियों को जगाकर संदेश देना ही " स्वदेश-संगीत " का उद्देश्य है. इस संग्रह में राग और उत्साह दोनों की व्यंजना प्रचुरता से हुई है. इसमें वीर रस की रचनाये मातृभूमि, भारत वर्ष, स्वर्ग सहोदर, मेरा देश, स्वप्नोत्थित, भारतवर्ष, बाजी प्रभु देश पाण्डे हैं जिनका विश्लेषण आगे मुक्तकों में किया जायेगा.

सिद्धराज -

" सिद्धराज " गुजरात की गौरव गाथा को प्रस्तुत करने वाला वीर रस पूर्ण खण्ड काव्य है जिसका नायक जयसिंह है. कवि ने इसमें नायक जय-सिंह को शूरवीर, साहसी, धीरोद्धात, मातृभक्त और प्रेमी के रूप में दर्शाया है. संपूर्ण कथानक में श्रृंगार वीर रस का सहायक बनकर आया है और कहीं-2 प्रेरक भी माना जा सकता है. इस खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने भारत की

धार्मिक उदारता और सांस्कृतिक समन्वय की भावना की भी पुष्टि की है. इसमें वीरत्व एवं राष्ट्र प्रेम की धारा साथ-साथ प्रवाहित हुई है जिस पर विस्तार से परवर्ती अध्याय में विचार किया जायेगा.

मंगल घट -

" मंगलघट " वीर रस का उत्कृष्ट काव्य संग्रह है. इसमें राष्ट्रीयता एवं वीर रस की अनेक सुंदर काव्य कलाकृतियाँ हैं. स्वदेश संगीत की सभी वीर रस की रचनाओं के अतिरिक्त पृथ्वीराज का पत्र, नकली किला, एवं विकट भट वीर दर्पपूर्ण उक्तियों से परिपूर्ण काव्य कृतियाँ हैं. अब पृथ्वी-राज का पत्र पत्रावली में, नकली किला " रंग और भंग " के रूप में एवं " विकट भट " स्वतंत्र रूप में प्रकाशित हो चुके हैं. एक प्रकार से आख्या-नों पर आधारित कविताएँ तथा कुछ रचनायें स्वतंत्र विषयों पर हैं जिनका विवेचन मुक्तक रचनाओं के बाद निबद्ध काव्यों में करना उचित होगा.

जयभारत

महाभारत की वृहत् कथा के आधार पर लिखित जयभारत एक प्रबन्ध काव्य है. महाभारत की समस्त घटना को कवि ने सांगोपांग ग्रहण किया है. नहुष के आख्यान से लेकर पांडवों के स्वर्गारोहण तक एक भी ऐसी घटना नहीं जिसे कवि ने अछूता छोड़ा हो. यह भारतीय जीवन के उत्थान एवं पतन का पुनर्राख्यान है, जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति के विकासोन्मुख स्वरूप और उसकी अप्रतिहत चेतना का अभिलेखन किया गया है. इसमें वीर रस के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं. अर्जुन युद्धवीर के रूप में, युधिष्ठिर धर्म-वीर, कर्ण युद्धवीर एवं दानवीर के रूप में दर्शाया गया है. वीर रस का यह एक अनुपम काव्य है जिसका विस्तार से विश्लेषण महाकाव्यों के उपरांत प्रबन्ध काव्य के अंतर्गत किया जायेगा.

मूल्यांकन

उपर्युक्त वर्णन से यह दृष्टिगोचर हो जाता है कि विवेच्य काल में

गुप्तजी के तीन खण्ड काव्य, एक महाकाव्य एवं दो मुक्तक संग्रह वीर रस के संदर्भ में आते हैं. ये कृतियाँ राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी हुई वीर रस की ही कृतियाँ हैं जिनका आधार कवि ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्त्रोतों से ग्रहण किया है. वैष्णव होने के कारण इनकी प्रवृत्ति पौराणिक संदर्भों से जुड़ी हुई है. जैसा हम पहले भी कह चुके हैं कि हमारी काव्य चेतना प्रारंभ में राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण से आधार ग्रहण करके अतीत के गौरवमय पृष्ठों के उद्घाटन में प्रवृत्त रही है और इसका पूर्णतः प्रभाव गुप्त जी पर दृष्टिगत किया जा सकता है, जो स्वाभाविक भी है.

सूर्यकान्त त्रिपाठी " निराला "

हिन्दी काव्य में क्रान्ति एवं विद्रोह का शंखनाद फूंकने वाले प्रगति एवं प्रयोग के अमर कवि महाप्राण निराला का जन्म महिषादल राज्य के एक सिपाही पं० रामसहाय के घर संवत 1955 विक्रमी को हुआ. पहले इनका नाम सूर्जकुमार था परन्तु 22 दिसम्बर 1923 ई० में " जूही की कली " के प्रकाशन के समय इनका सूर्यकान्त त्रिपाठी नाम निराला उपनाम के साथ मिलकर प्रकाश में आया. जन्म के तीन वर्ष के उपरान्त इनका माता का देहान्त हो गया. पिता ने ही माता की ममता और पिता का प्यार दिया. लाड़ प्यार के कारण ये प्रकृति से खिलाड़ी नटखट और कुछ-कुछ जिद्दी भी हो चले थे. पिता के कठोर अनुशासन में रहने के कारण निराला के व्यक्तित्व का विकास पौरुष की कठोर भूमि पर हुआ जिसके फलस्वरूप निराला में अद्भुत सहनशीलता का भी विकास हुआ. घर पर ही इन्होंने हिन्दी, संस्कृत और बंगलाका ज्ञान प्राप्त किया . पन्द्रह वर्ष की अवस्था में इनका विवाह रायबरेली के डलमऊ निवासी पं० रामदयाल द्विवेदी की आयुष्मती कन्या मनोहरा देवी के साथ हुआ. इनकी दो संतानें पुत्र एवं पुत्री हुई. 1917 ई० में पिता की मृत्यु के उपरान्त परिवार का सारा दायित्व इन पर आ गया. पत्नी भी इन्हें सदा के लिए छोड़कर चली गयी पर नियति का दमन चक्र यहीं समाप्त न हुआ.

पिता और पत्नी की मृत्यु के उपरान्त भाई और भाभी भी उन्हें छोड़कर चले गये. ये अत्याधिक स्वाभिमानी, साहसी एवं दृढ़ प्रतिज्ञ थे. किसी की परवाह किए बिना कबीर की भाँति सामाजिक कुरीतियों तथा रुढ़ियों पर व्यंग्यपात करते रहे. इनकी मातृभूमि विषयक प्रथम कविता " प्रभा " में जून 1920 ई0 में प्रकाशित हुई. सन् 1923 में महादेव प्रसाद सेठ, नव-जादिकलाल श्रीवास्तव के सहयोग से " मतवाला " नामक साप्ताहिक पत्र निकाला जिसमें इनकी " जूही की कली " नामक कविता छपी. इनके काव्य में छायावादी, प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं. उनकी कविता का व्यंग्य भी अनुपम है. मुक्त छन्द के ये ही जन्मदाता हैं तथा " राम की शक्ति पूजा " के माध्यम से इन्होंने हिन्दी काव्य की नवीन दिशा का उद्घाटन किया. 26 अक्टूबर सन् 1961 में हिन्दी साहित्य का यह सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया. कवि की निम्नलिखित रचनायें प्रकाश में आई हैं --

अनामिका ‡सन् 1923 ‡, परिमल ‡1930‡, गीतिका ‡1936‡, तुलसीदास ‡सन् 1938 ‡, अणिमा ‡ 1946 ‡, कुकुरमुत्ता ‡सन् 1942 ‡, बेला ‡ सन् 1942 ‡, अपरा ‡सन् 1946 ‡, नये पत्ते ‡ सन् 1946 ‡, अर्चना ‡ 1950 ‡, आराधना ‡सन् 1953 ‡, गीतगुंज ‡सन् 1954 ‡, कविश्री ‡ सन् 1956 ‡.

निराला मुख्यतः छायावादी काव्य चेतना के कवि हैं. उनकी तुलसीदास खण्डकाव्य में जहाँ उनकी कला चेतना उभर आयी है, वहाँ वह सांस्कृतिक जागरण की भूमि का स्पर्श करते हैं. उपर्युक्त संग्रहों में वीर रस की कोटि में आने वाली रचनाओं की संख्या अतिअल्प हैं. प्रस्तुत विवेचन के अंतर्गत केवल निम्नलिखित कविताओं को ही रखा जा सकता है. जागो फिर एक बार, बादल राग, शिवाजी का पत्र. ये रचनायें परिमल में सर्व प्रथम प्रकाशित हुईं, जिन्हें आगे चलकर अपरा में भी स्थान प्राप्त हुआ. उनका वर्णन आगे चलकर मुक्तक एवं निबद्ध काव्यों में किया जायेगा.

माखनलाल चतुर्वेदी

एक भारतीय आत्मा के नाम से विख्यात पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म चैत्र शुक्ल एकादशी संवत् 1946 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई ग्राम में हुआ था. इनके पिता का नाम पंडित नंदलाल जी चतुर्वेदी था. प्रपितामह राजस्थान के राणीला वडीला नामक ग्राम के निवासी थे, अतः वंश परम्परा के अनुसार माखनलाल चतुर्वेदी जी की शिराओं में राजस्थानी रक्त प्रवाहित था. उनके काव्य में ओज, त्याग बलिदान और देश प्रेम के लिए मर मिटने के लिए स्वर मुखरित हुए हैं . बालपन से ही माखनलाल बड़े शरारती, चंचल एवं नटखट थे. अपनी शरारती प्रवृत्ति के कारण गुरु बालभट्ट को बहुत तंग करते और हरदा में रहने वाली उपपत्नी के सम्बन्ध में खरिया मिट्टी से दीवार पर एक दोहा लिखकर कर दी.[1] कालान्तर में यही प्रतिक्रिया जब व्यक्तिगत स्वर से ऊपर उठकर राजनैतिक क्षेत्र में प्रकट हुई तब माखनलाल जी के स्वर में अंग्रेजी शासन के विरोध में विद्रोह का सिंहनाद हुआ और हिन्दी काव्यधारा को एक नटखट बालक एक सैनिक कवि के रूप में उपलब्ध हुआ.

चतुर्वेदी जी को संस्कृत, हिन्दी, ब्रज भाषा, अंग्रेजी, मराठी के अतिरिक्त बंगला और उर्दू का भी अच्छा ज्ञान था. इन पर तिलक जी की क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रभाव अत्यधिक था. देश के हित के लिए मृत्यु को गले लगाने की उमंग, आदर्श पर, देश पर, स्वतंत्रता पर मर मिटने की चाह उन पर पड़े हुए उग्र विचारधारा के प्रभाव को प्रकट करती है. माखनलाल जी की चेतना बंदी भारत की वेदना से जुड़ी हुई थी और वे यही अनुभव कर रहे थे कि इस देश में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे बंदी बलिदान के बिना मुक्त नहीं हो सकते. इन पर रामतीर्थ के साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानी पंडित माधवराव सप्रे का भी प्रभाव पड़ा. राजनीतिक की चिन्ता में दिनरात लगे रहने के कारण ये अपने परिवार की तरफ समुचित ध्यान नहीं दे पाये. सन् 1919 -20

में महात्मा गांधी के आह्वान को सुनकर उनके द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की प्रतिज्ञा की. अब वे अपनी लेखन और भाषण दोनों के माध्यम से लोक जागृति के पुनीत कार्य में जुट गये. परिणाम-स्वरूप दो जुलाई 1921 को इन्हें 8 मास के लिए सश्रम दंड देकर कारा-वास में भेज दिया गया. " हिमकिरीटिनी " पर इन्हें देव पुरस्कार तथा हरिद्वार में चाँदी के सिक्कों से तुलादान हुआ. " हिमतरंगिनी " पर सन् 1954 में भारत सरकार की साहित्य अकादमी की ओर से पाँच हजार रुपयों का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला. 1947 में इन्हें " साहित्य वाचस्पति " की उपाधि, 30 नवम्बर 1956 में सागर विश्वविद्यालय से डी० लिट् 0 की उपाधि एवं 1963 में डॉ० राधा-कृष्णन ने माखनलाल जी को उनके व्यक्तिगत गुणों के सम्मान में " पद्मभूषण " उपाधि से अलंकृत किया. 30 जनवरी 1968 को खंडवा में अपने निवास स्थान पर इनका निधन हो गया.

कवि की काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं ...

" हिमकिरीटिनी " (सन् 1948), " हिमतरंगिनी " (सन् 1949), " माता " (सन् 1951), युगचरण (सन् 1956), समर्पण " (सन् 1956), वेणु लो गूंजे धरा (सन् 1960), आधुनिक कवि भाग -6 (सन् 1960), बीजुरी काजल आँज रही (सन् 1964), एवं " मरण ज्वार " (सन् 1970) में श्रीकान्त जोशी द्वारा सम्पादित).

उपर्युक्त कृतियों में से " हिमकिरीटिनी ", " माता ", युग चरण " एवं " समर्पण " में इनकी वीर रस की कुछ कवितायें संग्रहीत हैं. अन्य " वेणु लो गूंजे धरा एवं बीजुरी काजल आँज रही " प्रकृति से सम्ब-न्धित काव्य हैं एवं आधुनिक कवि भाग - 6 में सभी संग्रहों में संग्रहीत कविताओं को स्थान दिया गया है.

हिमकिरीटिनी - माखनलाल जी की प्रतिनिधि रचनाओं का संग्रह है. इसमें कवि की 1913 से लेकर 1940 ई० तक की रचनायें संग्रहीत हैं. इसमें कुल

44 कवितायें हैं जिनमें " मरण त्यौहार ", " सिपाही ", " विद्रोही ", " नाश का त्यौहार " , " तिलक ", " वीर पूजा ", " जवानी, ", " मरण ज्वार ", " सिपाहिनी " और " हिमकिरीटिनी " आदि वीर रस से संपुष्ट हैं. बलि की भावना ही इस संग्रह का मूल मंत्र है. इस कृति की राष्ट्रीय प्रेम युक्त रचनाओं में वीर रस का रसात्मक परिपाक कम किन्तु बौद्धिक तथा चिन्तनयुक्त राष्ट्रीयता का विवेचन अधिक है.

माखनलाल चतुर्वेदी का " माता " नामक यह संग्रह राष्ट्रीय प्रेम की रचनाओं से ओतप्रोत है. इस संग्रह की प्रमुख प्रवृत्ति सांस्कृतिक चेतना के जागरण की है. इसकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम और भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट निष्ठ सर्वत्र दिखाई देती हैं. इस संग्रह की कुल 56 रचनाओं में से " रामनवमी ", " जयगीते ", " भारत के भावी विद्वान ", " दुर्गम पथ ", " सेनानी ", " राष्ट्रीय झण्डें की भेंट ", आदि रचनाएँ वीर रस से ओत-प्रोत हैं एवं उपर्युक्त कवितायें ही हमारे विषय से सम्बद्ध कही जा सकती हैं.

युग चरण एवं समर्पण में आत्मोत्सर्ग, राष्ट्रप्रेम, स्वदेश प्रेम एवं मानवतावादी स्वर ही अधिक दिखाई देता है. इनमें संग्रहीत 94 रचनाओं में से " लालटीका ", " युगध्वनि ", पर्वत की अभिलाषा ", " पुष्प की अभिलाषा ", " सेनानी ", बंग जननी ", वीर रस की रचनायें हैं. इस कविताओं की मूल चेतना बलिभावना की प्रवृत्ति है. मुख्यतः कवि ने सुसुप्तों को जगाने का कार्य किया है और इसके लिए देश के नवयुवकों को आगे आने के लिए आह्वानित किया है. कवि वर्तमान दुर्दशा पर झुंझलाता और कर्मचेतना को जगाता प्रतीत होता है. अतः उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि की मूल भावना बलिदान की है और ये मूलतः बलि भावना के कवि हैं ।

बालकृष्ण शर्मा नवीन

विप्लव और क्रान्ति का शंखनाद करने वाले, सामाजिकता के समर्थक और हर प्रकार के शोषण के प्रबल विरोधी नवीन जी का जन्म ग्वालियर राज्य के भयाना नामक गाँव में आठ दिसम्बर सन् 1897 ई० में हुआ इनकी व्यवस्थित शिक्षा-दीक्षा का प्रारंभ अपने जीवन के ग्यारहवें वर्ष में शाजापुर में हुआ. कवि की माता ने अत्यधिक कठिनाई से इनका लालन पालन कर पढ़ाया लिखाया. कवि के मोहक व प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के बारे में मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था..

" क्या कहना है, उनके व्यक्तित्व का. क्या रूप, क्या वर्ण और क्या बोलचाल, उनका सबकुछ आकर्षक था. जैसा विनय वैसा ही अभय. जब जिस वेश में रहते थे वही उन्हें फबता था । " [2]

उनका उन्नत ललाट, सिर पर घुंघराले केशों का गुच्छा, विशाल नेत्रों में प्रतिभा, गौरवर्ण का शरीर, पुष्ट व सुडौल छाती उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाती थी. वे एक पक्के वैष्णव एवं संस्कृति और शिष्टाचार की प्रतिमूर्ति थे . राष्ट्रीय सेनानी के रूप में उनका व्यक्तित्व अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क तथा मार्गदर्शन में विकसित हुआ. विचारों में वे क्रांतिकारी और विद्रोही थे. अन्याय, कुरीतियों व कंगाली से वे डटकर जूझते थे. भारतीय समाज के दोषों के ऊपर उन्होंने एक बहादुर के समान आक्रमण किया और उन्हें विध्वंस करने का प्रयत्न किया. उनका व्यवहार न्यायानुकूल और समान रहता था. वे किसी के साथ पक्षपात नहीं करते थे. जब वे सभा के सम्पादक थे, तब लेखकों के नाम के आधार पर नहीं अपितु रचना की उत्कृष्टता व अपने समान बर्ताव के अनुरुप रचनायें प्रकाशित करते थे. डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है ..

" मित्रों के लिए वे गंगा जल थे. सौजन्य की धारा के अटूट स्त्रोत थे । " [3]

नवीनजी मूलतः कवि थे अतएव वे अपनी भावनाओं से अधिक परिचालित होते थे. कवि में बुद्धि पक्ष की अपेक्षा हृदय तत्व का प्रभुत्व अधिक था. भावोद्रेक व करुणा के तत्व उनके व्यक्तित्व के प्रमुख अंग थे. इस प्रकार वे बहुत जल्दी आवेश में आ जाते और शीघ्र ही दयार्द्र भी हो जाते थे. बच्चों को मारना पीटना उन्हें अच्छा नहीं लगता था और ऐसे समय में उनकी करुणा उभर कर रोष का रूप भी ले लिया करती थी. [4] पर इन्हें बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त थी, कवि सम्मेलन के मंच पर वे श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर लिया करते थे. डा० नगेन्द्र ने भी इन्हें भावुक, उद्वेलनशील और ओजस्वी वक्ता के रूप में देखा है. [5]

कवि की काव्यकृतियाँ इस प्रकार हैं ...

कुंकुम ‌‍§1939 ई० §, रश्मिरेखा § 1951 ई० §, अपलक § 1951 ई०§, क्वासि § 1951 ई ०§, विनोबा §तवन §2010 §, उर्मिला §1957 ई० §, प्राणार्पण §1962 ई०§.

कवि की इन सात कृतियों में कुंकुम एवं प्राणार्पण वीर रस की कोटि में आती है. इन्हीं रचनाओं पर यहाँ विचार किया जायेगा.

" कुंकुम " में संग्रहीत कवि की कवितायें 1921 से लेकर 1932 तक की हैं. इसमें देशभक्ति परक रचनाओं की प्रधानता है. " विप्लव गायन ", " पराजय के गीत " एवं शिखर पर " वीर रस के सुन्दर उदाहरण है. राष्ट्रीय आन्दोलन के युग में कवि के हृदय में जो प्रतिक्रियायें, आक्रोश, भावावेश एवं मन्थन हुआ, इसी का ही प्रतिरूप यह संग्रह राष्ट्रीय काव्य के रूप में प्राप्त होता है. नवीन ने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्र के व्यक्तियों को अपनी श्रद्धा के सुमन चढ़ाये हैं और यह भावना वीर पूजा की भावना के समकक्ष ठहरती हैं. नवीन जी की " शिखर पर " शीर्षक कविता में बलिदान की एक ज्वलन्त उत्तेजना विद्यमान है. सत्याग्रहियों के कारावास की कठिनाईयों का भी सजीव चित्र कवि ने अपनी कविताओं में खींचा है. इस पर विस्तृत विवेचन अलग से अगले अध्याय में

किया जायेगा ।

" प्राणार्पण " में अमर शहीद स्व० गणेश शंकर विद्यार्थी के ज्वलन्त आत्मोत्सर्ग पर आधारित है, 25 मार्च 1931 ई० को कानपुर में हुए सम्प्रदायिक दंगे में हुए विद्यार्थी जी के बलिदान की कथा इस खण्ड काव्य में अंकित है. कवि ने इस काव्य में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, गांधी के सत्याग्रह आंदोलन, राष्ट्रीयता की भावना, स्वाधीनता प्रतिज्ञा पत्र, गांधी इरविन समझौता, भगतसिंह का प्राणदण्ड, जनजागृति, साम्प्रदायिक दंगे आदि का बड़ा ही सजीव व मार्मिक चित्र खींचा है. इस प्रकार कवि ने वीर रस युक्त राष्ट्रीय काव्य का सृजन किया है.

बालकृष्ण शर्मा " नवीन " जी की ये दो ही रचनायें विवेच्य काल में ली जा सकती हैं जिनमें से " कुंकुम " में वीर रस की मुक्तक रचनायें संग्रहीत हैं और " प्राणार्पण " खण्डकाव्य में बलिदानी कर्मवीर गणेश शंकर विद्यार्थी के बलिदान को दर्शाया गया है. समग्र रूप से देखा जाये तो इनमें क्रान्तिकारी विचार अधिक दृष्टिगोचर होते हैं. यद्यपि इनकी रचनाओं में युद्धवीर का उदाहरण नहीं मिलता परन्तु मुख्यत: कर्मवीर नामक वीर पाये जाते हैं जिन्हें पूर्ववर्ती विवेचन में हमने वीरों की कोटि में स्थान दिया है. इस प्रकार हम उपर्युक्त विवचेन के आधार पर कह सकते हैं कि नवीन जी मूलत: राष्ट्रीयता के कवि हैं.

सोहनलाल द्विवेदी -

राष्ट्रकवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं. उन्होंने यद्यपि प्रणय गीतों की रचना भी की हैं और प्रकृति-सौन्दर्य, ग्राम्य जीवन तथा बालपयोगी विषयों को भी अपने क्षेत्र में समाविष्ट किया है, परन्तु वे मुख्य रूप से राष्ट्रीयता के स्वर साधक ही रहे हैं. पंडित सोहनलाल द्विवेदी का जन्म फाल्गुन शुक्ल अष्टमी, संवत् 1962 विक्रमी को बिन्दकी के एक सुसम्पन्न कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था. द्विवेदी जी के पिता पंडित विन्दाप्रसाद द्विवेदी थे.

कवि की प्रारंभिक शिक्षा फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) एवं उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई. वहाँ के राष्ट्रीय वातावरण एवं महामना मालवीय जी के सान्निध्य से कवि ने पर्याप्त प्रेरणा प्राप्त की. भारत की परतंत्रता एवं महात्मा गांधी के आंदोलनों ने भी आपके हृदय को प्रभावित किया. अस्तु आपने हिन्दी में राष्ट्रीय कवितायें लिखना आरंभ किया. द्विवेदी जी की कई कवितायें उस समय कांग्रेस अधिवेशनों में गाई गईं. " खादी " जैसी कविताओं को तो देश प्रेमी युवकों ने कण्ठहार ही बना लिया था. हिन्दू विश्वविद्यालय से एम० ए० , एल०-एल० बी० करके आप घर लौटे. वकालत की ट्रेनिंग भी ली, पर उसे आप अपना न सके. साहित्य साधना ही उनके जीवन का पथ बन गई, जिस पर वे आज तक अग्रसर हैं.

द्विवेदी जी में एक सफल कवि, देश-प्रेमी जन नायक, सम्पादक, भक्त, अक्खड़ सन्त, अनासक्त कर्मयोगी एवं भारतीय संस्कृति के उपासक के दर्शन एक साथ हो जाते हैं. [6] वे एक जमींदार एवं व्यवसायिक परिवार में जन्मे और पले हैं. सर्वविध सुख- सुविधाओं में ही उनका जीवन बीता और बीत रहा है, पर अभिमान उनमें लेशमात्र भी नहीं है. छोटे से छोटे सरल निर्धन ग्रामीणों तक से इनकी हार्दिक प्रीति कवि की संवेदनशीलता की परिचायक है. निस्पृह एवं स्वाभिमानी होने के साथ-2 वे जन्मजात स्पष्टवादी भी है. वे प्रत्येक कार्य सहजभाव से करना चाहते हैं और वैसी ही दूसरों से भी अपेक्षा करते हैं. बनावटीपन उन्हें पसंद नहीं, द्विवेदी जी भारतीय संस्कृति के वाह्य एवं आभ्यंतर दोनों रूपों के उपासक हैं. धोती कुर्ते के प्रति उनका आकर्षण सहज है.

देश प्रेम एवं कर्मठता द्विवेदी जी की बड़ी विशेषता है. राणा, शिवाजी, तिलक, गांधी, सुभाष, जवाहर आदि भारत मां के स्वतंत्रता सेनानियों को आपने गौरव गान का विषय बनाया. उनके हृदय में , तुलसीदास की भक्तिभावना, राणा प्रताप एवं गौतम बुद्ध का त्याग, शंकर का अद्वैत, शिवा, तिलक एवं गांधीजी की देश सेवा भावना, सुभाष,

जवाहर एवं शास्त्री जी की कर्मयोगिता इन सभी ने श्रेष्ट आसन पाया है.[7] द्विवेदी जी गांधी युग के कवि हैं. इन्होंने उस चिरस्मरणीय अतीत काल में अपने ओजपूर्ण तथा प्रेरक काव्यों तथा गीतों द्वारा हिन्दी साहित्य की, हिन्दी भाषी जनता की तथा राष्ट्र की बड़ी सेवा की. द्विवेदी जी ने जो कुछ भी लिखा है या लिख रहे हैं, सदा जाग्रत रहकर लिखा है एवं यशोलिप्सा के पीछे मारे-मारे नहीं फिरे हैं. इसीलिए शायद इनका काव्य मन की निरर्थक कटुता से मुक्त है. इस प्रकार हम कह सकते है कि नये जाग्रत भारत की चेतना को व्यापक एवं गहन करने में गांधीयुग भारत के कवि सोहनलाल द्विवेदी का अमिट योगदान है जो भुलाया नहीं जा सकता.

कवि की मौलिक तथा सम्पादित रचनायें निम्नलिखित हैं --
भैरवी (1941 ई0), वासवदत्ता (1942), कुणाल (1942), चित्रा (1943), वासन्ती (1943), पूजागीत (1944), युगाधार (1944), प्रभाती (1944), विषुल (1944), विषपान (1945), संवाग्राम (1946), चेतना (1954).

संपादित -

गांधी अभिनन्दन ग्रंथ (1944), जयगांधी (1956).

इनमें से भैरवी, वासवदत्ता, पूजागीत, प्रभाती संग्रह वीर रस की कोटि में आते हैं जिनका विवेचन यहाँ द्रष्टव्य हैं.

भैरवी

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं का यह संग्रह राष्ट्रीय है. देश-सेवा, देश स्वातन्त्र्य की दृढ़ता, गरीबी तथा गरीबी के चित्र, इन सब की प्रेरणा में राष्ट्रीयता काम करती है. उनके इस संग्रह में यदि बापू हैं तो मालवीय तथा जवाहर भी है. यदि बुद्ध हैं तो तुलसी भी है, महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी भी है. देश का उद्धार करने वाला कहीं भी, फूल उस पर बिखरने लगता है. परतंत्रता की संकरी सांकल में तड़पती

हुई संवेदनशील कवि की अन्तरात्मा समूचे भारत का स्मरण करते हुए पुकारने लगती है. इसी भावावेग की परम्परा में कवि कहीं " प्रयोण गीत " गाता है तो कहीं नवीन जी के " विप्लव गायन " के जोड़ तोड़ पर विप्लवगीत " गाता है. इसमें कवि ने भारतभूमि की स्वतंत्रता एकता तथा जनता की दासता मुक्ति के द्वारा कवि ने अपना गहरा राष्ट्रीय लगाव व्यक्त किया है. इसके साथ-2 बीज भाव की भाँति निहित रहने वाली सांस्कृतिक एकता की चेतना अनवरत स्मृति पथ में रही प्रतीत होती है. " सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी " में कवि सुप्त राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रतीत होता है. इसमें कवि ने सांस्कृतिक स्तूपों, ज्वालमालाओं तथा देदीप्यमान व्यक्तित्वों का स्मरण किया है. वर्ग संघर्ष के वैषम्य पर ध्यान देता हुआ कवि " गाँवों में, " " झोपड़ियों की ओर ", " विषमता ", आज रुद्ध है मेरी वाणी " में क्रंदन करता प्रतीत होता है. वास्तव में यह कवि की कृति वीरत्वपूर्ण राष्ट्रीय रचनाओं की कृति है. विशद विवेचन अगले अध्याय में किया जायेगा.

वासवदत्ता

" वासवदत्ता " में प्रेम एवं कर्तव्य तथा आदर्शों के द्वन्द्व के कई प्रसंगों को चुनकर लिखी कवितायें मिलती हैं. इसमें कवि, भारतीय युग-युग को जहाँ इतिहास अपनी संकरी गलियों को खोदकर, प्राचीन धूल मिट्टी का मान नहीं आँक रहा, वरन् जहाँ संस्कृति का तरल रूप मानव के द्वारा अभिव्यक्त हो उठा हैं. उसके द्वारा युग-युग को युग युग के लिए रखता प्रतीत होता है. " वासवदत्ता " श्रृंगार की आधार शिला पर निर्मित तथा ओज एवं आत्म निग्रह का सुगठित मंदिर है. कुन्ती और कर्ण, " सरदार चूड़ावत " में वीरता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है. " एकबूंद " में भी सर्वस्व अर्पित करने की भावना ही कवि ने बूंद के माध्यम से दिखाई है. इसमें भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में कवि के विश्वास और आचार निष्ठा ने इन कथानकों को गति प्रदान की है.

पूजागीत

" पूजागीत " श्री द्विवेदी जी की राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है. इस संग्रह में राष्ट्रीयता की भावना, आशा, साहस, ओज, दृढ़ता, बलिदान, उत्साह और आत्मसम्मान के बीच प्रस्फुटित हुई है. कवि की राष्ट्रीयता मातृपूजा, युग की पुकार और देश के जागरण गान में हुई है. राष्ट्रीयता की साधना के बीच जो यौवन का आह्वान किया गया है तथा आशा एवं निराशा के जो स्वर फूटे हैं , उन सब के तल में देश प्रेम की अविरल धारा का स्त्रोत है, कवि बन्दिनी मां को नहीं भूल सका है. द्विवेदी जी की राष्ट्रीयता का केन्द्रीय तत्व बलिदानवादी राष्ट्रीयता है. बलिदान उसकी मूल प्रेरणा एवं मूल स्त्रोत है. बलिदान की यह दृढ़ता अनायास ही नहीं आ गई है. कवि के सामने भी श्रेय और प्रेय का द्वन्द्व था. कवि के व्यक्तित्व के बीच विलास एवं बलि का जो अन्तर्द्वन्द्व छिड़ा था, उसकी झलक भी " आज मैं किस ओर जाऊँ " में मिल जाती है. इस " पूजागीत " में सोहनलाल जी की राष्ट्रीय चेतना का पूर्ण विकास दिखाई देता है. इस संग्रह की सभी कवितायें राष्ट्र प्रेम की बलवती भावना से अनुप्राणित है.

प्रभाती

सोहनलाल द्विवेदी की " प्रभाती " में युग के स्वर्णिम प्रभात के मधुर स्वागत गीत हैं. आज का कवि यथार्थ की ओर उन्मुख है. वह राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित है. " प्रभाती " की रचना से साहित्यिक सम्पर्क करने का सुंदर प्रयास है. इस संग्रह में राष्ट्र के प्राण गांधी एवं उनसे सम्बन्धित अन्य विषयों पर मधुरगीत हैं, हमारी संस्कृति एवं साहित्य के मेरुदण्ड महान पुरुषों एवं कवियों पर सुंदर रचनायें हैं. देश के प्रति प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों के प्रति गौरवगान " प्रथम प्रणाम " शीर्षक कविता द्वारा कवि ने किया है. बलिदान की भावना, सत्याग्रह, हिन्दू मुसलिम ऐक्य, अछूतोद्धार एवं स्वदेशी व्यवहार इस संग्रह के मुख्य अंग हैं.

अतीत के प्रति मोह और वेदना भी इसमें दृष्टिगोचर होती है. स्वतंत्रता के पुजारी प्रताप के माध्यम से भारतीय वीरों को स्वतंत्रता के लिए बलिदान की प्रेरणा देता है. इस संग्रह की सभी कवितायें राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं.

चेतना

सोहनलाल द्विवेदी ने अपने चेतना नामक काव्य संग्रह में गांधीवादी विचारधारा से सम्बन्ध कवियों द्वारा यह सिद्ध किया है कि वे देश की प्रत्येक धड़कन को सुनते हैं और उसे अपनी वाणी का विषय बनाते हैं. " चेतना " उनके काव्य का प्रतिनिधित्व करनेवाला काव्य संग्रह हैं.

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि की " जयकेतन ", " तिरंगध्वज ", " तरुणाई का तकाजा ", " स्वतंत्रता के पर्व ", " कोटि प्रणाम ", " प्रभाती ", " क्रान्ति ", " दाँडी यात्रा ", " त्रिपुरी काँग्रेस " " राणा प्रताप ", " प्रयाण गीत " ,विप्लव गीत ", " आजादी के फूलों पर ", " सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी ", " हथकड़ियाँ ", जय-जय जय ", " जय राष्ट्रीय निशान ", " आज किस ओर जाऊँ ", " आज है रण का निमंत्रण ", " आज तुम किस ओर ", " कुन्ति और कर्ण ", " सरदार चूड़ावत " आदि वीर रस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं. इन कविताओं में मुक्ति प्राप्ति की तड़प, उल्लास, बलिदान की भावना, राष्ट्रीयता और विश्व बन्धुत्व, अहिंसा आदि का समावेश हुआ है. जहाँ मुक्ति प्राप्ति के उल्लास का संबंध है वह एक तो राष्ट्र ध्वजा की वन्दना में व्यक्त हुआ है और दूसरे मुक्ति पर्व विषयक उद्गारों में. राष्ट्रध्वजा हममें बलिदान की प्रेरणा ही नहीं जगाती, वह स्वतंत्रता पर बलि होने वाले शहीदों की स्मृति भी जगाती है. फिर वह हमें संगठित होकर शत्रु से लोहा लेने की प्रेरणा भी देती है और स्वतंत्र होकर अपने देश का नव- निर्माण करने को प्रोत्साहित करती है. बलिदान होने की भावना भी इसमें मुखरित हुई है. " तुझे शपत " है " में कवि ने देश भक्त वीरों

---को देशभक्ति और देश में हो रहे अत्याचार की याद दिलाई है. इस प्रकार इन संग्रहों में कवि ने अपने राष्ट्र को ही मुखर किया है. उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि ये मुख्यतः राष्ट्रीयता और गांधीवादी कवि हैं.

श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद "

राष्ट्रीयता के अमर गायक श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " जी का जन्म सं 1953 भाद्रपद शुक्ल, चतुर्थी को [सन् 1896] कानपुर जनपद के नर्वल ग्राम में हुआ था. इनके पिता का नाम श्री विश्वेश्वर प्रसाद एवं माता का नाम कौशल्या देवी था. नर्वल में हिन्दी की मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करके उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की " विशारद " परीक्षा उत्तीर्ण की. पन्द्रह वर्ष की आयु में ही पार्षद जी की काव्य प्रतिभा का पहला प्रमाण उपस्थित हो गया. उन्होंने हरगीतिका, सवैया, घनाक्षरी आदि छन्दों में राम कथा के बालखण्ड की रचना की. पिता विश्वेश्वर प्रसाद को किसी के यह कहने पर कि यदि पार्षद जी को कविता लिखने से न रोका गया तो नेत्र व कान आदि नष्ट हो जायेंगे, परिणामतः पिताजी ने पार्षद जी द्वारा रचित सम्पूर्ण बालकाण्ड को कुँए में फेंक दिया. इसके परिणामस्वरूप इन्हें छिपकर रचना करनी पड़ी.

सन् 1912 में गणेश शंकर " विद्यार्थी " जी ने " प्रताप " पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशन किया और पार्षद जी पाठक होने के नाते विद्यार्थी जी के सम्पर्क में आये और इसके साथ ही इनकी रचनायें भी " प्रताप " में स्थान पाने लगी. जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए सन् 1914 में पार्षद जी म्युनिसिपल बोर्ड कानपुर के पुरवा कानपुर प्राइमरी स्कूल के अध्यापक बने. यहाँ इन्होंने नौकरी का बांड भरने से इन्कार कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप इन्हें स्कूल से त्याग पत्र देना पड़ा. तदन्तर तीन वर्ष तक पार्षद जी दोसर वैश्य इण्टर कालेज कानपुर

की स्थापना एवं संचालन में लगे रहे. सन् 1919 में गांधीजी के आह्वान पर पार्षद जी सक्रिय राजनीति में आकर अत्यन्त पिछड़े जिले फतेहपुर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया. सात वर्ष तक फतेहपुर जिला कांग्रेस के वे अध्यक्ष रहे. सन् 1921 में असहयोग आंदोलन के समय ये पहली बार जेल गये. सन् 1924 में कानपुर के एक तथाकथित घोर असामाजिक बड़े आदमी पर व्यंग्य रचना लिखने के कारण पुनः कारावास तथा 400/- जुर्माने का दंड भोगना पड़ा. सन् 1930 तथा 1944 में पुनः कारावास एवं 1932 से 1942 में फरारी हालत में रहे. अमर शहीद विद्यार्थी जी की डाँट फटकार तथा टण्डन जी के आदेश पर पार्षद जी ने 1924 ई0 में उस पावन झण्डा गीत की रचना की जो उनकी ख्याति का मुख्य कारण था. सर्वप्रथम यह गीत पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गाकर देश को अर्पित किया था. सन् 1974 में इस गीत को पूरे पचास वर्ष हो गये हैं. सन् 1924 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से झंडा गीत को मान्य किये जाने की सूचना तार द्वारा दीक्षित जी ने पार्षद जी को दी थी.[8]

पार्षद जी की अनेकानेक राष्ट्रीय रचनाओं एवं स्वागत गीतों ने उस युग के शिखरस्त कवियों के हृदय में असूयाभाव उत्पन्न कर दिया था. सन् 1924 में उन्होंने जो कविता कानपुर जिला राजनैतिक कांन्फ्रेंस में पधारे जवाहरलाल नेहरू, जमुनालाल बजाज तथा शंकर लाल बैंकर के स्वागत में लिखी थी. उस रचना को सुनकर उपस्थित विशाल जनसमूह विस्मय विमुग्ध हो उठा था. उनकी कविताओं पर मुग्ध होकर समय-समय पर जमुनालाल बजाज ने 250/- , कविवर जगन्नाथदास रत्नाकर ने 101 रुपये तथा लाला फूलचंद जैन [कानपुर] ने 501/- के पुरस्कार दिये. पाण्डेय बेचन शर्मा " उग्र " ने अपने एक लेख [" आज " में प्रकाशित] के अंत में लिखा था-

" अगर पार्षद जी दूसरे देश में पैदा होते तो चाँदी उनके आंगन में बरसती, सम्मान उनके चरणों में लोटता होता, लेकिन यह कृतघ्न सरकार पार्षद जी की याद तक नहीं करती. "[9]

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बहुत पहले कहा था कि पार्षद जी को भले लोग न जानें, उनके " झण्डा गीत " को पूरा देश जानता है और सचमुच पार्षद जी अनजाने ही रह गये जबकि उनका " झण्डा ऊँचा रहे हमारा " देश के एक कोने से दूसरे कोने तक करोड़ों-करोड़ लोगों के मन प्राण पर छा गया. इनकी रचनायें हमारे देश के स्वतन्त्रता समर का ऐतिहासिक दस्तावेज हैं. यह भी एक ऐतिहासिक संयोग है कि उनकी कविताओं का यह संग्रह पहली बार भारत की स्वाधीनता के रजत पर्व पर प्रकाश में आया. इन्होंने दूसरे स्वतंत्रता संग्रामियों की भाँति पेंशन नहीं ली और न ही अपना काम किसी से करवाया जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका निम्न कथन है -

" सन् 48 में दिल्ली में मैं लाल किले से पैदल ही राष्ट्रपति भवन की ओर जा रहा था. लाल किले से कुछ ही दूर आगे पहुँचा था कि पीछे से आकर एक मोटर रुक गई - नेहरू जी उसमें से उतर कर नीचे आये, पूछा पार्षद जी, कैसे हो, आओ मेरे साथ बैठ जाओ . " मैंने कहा, " ठीक हूँ पर मोटर में नहीं बैठूंगा । " [10] हाल चाल पूछने के बाद वे चले गये. कुछ महीनों के बाद पंडित सोहनलाल द्विवेदीजी ने भी इन्हें अपने साथ दिल्ली चलने के लिए उकसाया ताकि पेंशन बढ़वाई जा सके परन्तु उन्होंने साफ इन्कार कर दिया. इस महान् स्वतंत्रता संग्रामी वीर कवि की मृत्यु 11 अगस्त सन् 1977 में हो गया. इनका एक ही काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है.

झण्डा ऊँचा रहे

यह श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " जी की भिन्न-भिन्न अवसरों पर लिखी गयी कविताओं का संग्रह है जो वीरत्व का आलोक पुंज है. राष्ट्र प्रेम का जो उदाहरण ये रचनायें प्रस्तुत करती हैं उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह तेजस्वी एवं व्रती कवि साधना के क्षेत्र में पूर्ण लगन के साथ अपनी कलम चलाता रहा है. इन सभी कृतियों की मूल चेतना राष्ट्रप्रेम

है. देश प्रेम से युक्त ये रचनायें भारतवासियों के लिए एक अमूल्य निधि हैं. आक्रोश, गहरी संवेदना, उत्साह, बलिदान, साहस एवं स्वतंत्रता चेतना से परिपूर्ण लगभग सारी कविताएँ राष्ट्रीयता पर केन्द्रित हैं. इनके काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति भारत माता के प्रति पूजा भावना है. जिसमें मातृभूमि के प्रति सम्मान, बलिदान एवं श्रद्धा की भावना है. दूसरी विदेशी शासन के प्रति असंतोष तथा तीसरी प्रवृत्ति गौरवमय अतीत के प्रेरक प्रसंगों से संबंधित रचनाओं में दृष्टिगोचर होती हैं. चतुर्थ वीर पूजा की मनोवृत्ति की है जिसमें युग पुरुषों के कार्यों का प्रेरणादायी वर्णन किया है. " विजयी विश्व तिरंगा प्यारा " संपूर्ण भारत वर्ष में गूंजा और सत्याग्रही वीरों को उत्साह प्रदान करता रहा. " समान है ", " नेहरु का स्वागत गान ", " विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ", " पंकज फूल्यौ ", " लाला लाजपतराय के प्रति " आदि वीर रस के उत्कृष्ट नमूने हैं. वास्तव में प्रस्तुत कृति में राष्ट्रीय चेतना की धारा शतशः प्रस्फुटित हुई है. कवि में देश प्रेम की भावना का पारावार लहराता प्रतीत होता है.

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि की सभी कविताओं में बलिदान, उत्साह एवं देश प्रेम की भावना दृष्टिगोचर होती है. अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि पार्षद जी मूलतः राष्ट्रीय भावना के कवि है.

रामधारी सिंह " दिनकर "

ओज और पौरुष के प्रतीक दिनकर का जन्म बिहार प्रदेश में " सिमरिया " नामक ग्राम के एक कुलीन कृषक परिवार में हुआ. इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह तथा माता का नाम मनरूपदेवी था. पिता के इस नाम के कारण ही इन्होंने अपना नाम दिनकर रखा. एक साधारण परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी दिनकर का प्रकाश वहीं तक सीमित न रहा अपितु समस्त विश्व भर में फैल गया. दो वर्ष की अल्प आयु में ही

पिता का साया सिर पर से उठ गया. विधवा माता के निर्बल कंधों पर परिवार का सारा बोझ आ गया. दिनकर माता को पूज्य समझते थे. वे एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेही पिता एवं निष्ठावान पति थे. प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात् इन्होंने एक राष्ट्रीय पाठशाला में शिक्षा ग्रहण की. अंग्रेजों का राज्य था और राष्ट्रीय पाठशाला को तत्कालीन दमन और राजनैतिक अत्याचार के परिणाम स्वरूप किस प्रकार संकट झेलने पड़ते थे इसकी कल्पना हम सहज ही कर सकते हैं. दिनकर के बालकंठ से जब " वन्दे मातरम् " की ध्वनि निकलती थी तो उस समय वातावरण गुंजित हो उठता था. इस पाठशाला का व्यय भिक्षाटन से चलता था और विद्यार्थी दिनकर को भी भिक्षाटन का गौरव मिला था. यह राष्ट्रीय पाठशाला यद्यपि छोटी थी फिर भी यह महान राष्ट्रीय संस्था की भाँति दिनकर की चेतना के साथ-साथ विस्तृत होती गयी. आगामी शिक्षा चाहे सरकारी स्कूलों में हुई परन्तु राष्ट्रीय पाठशाला के संस्कार उनके व्यक्तित्व के दृढ़ से दृढ़तर होते गये. दिनकर का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था. गोरा रंग, लम्बाई पांच फुट ग्यारह इंच, भारी भरकम शरीर, बड़ी-बड़ी आँखें, ललकार भरी बुलंद आवाज, तेज चाल, क्षिप्र बुद्धि यह था दिनकर के व्यक्तित्व का वैशिष्टय. इनको खद्दर का बारीक कुर्ता, धोती, जरी के किनारे का दुपट्टा प्रिय था. तम्बाकू का नियमित सेवन करना इनकी काव्य प्रेरणा का एक अंग था.

अर्थाभाव ने दिनकर को नौकरी ढूंढने के लिए बाध्य किया. पहले स्कूल में हैडमास्टरी की, पर स्कूल की पृष्ठभूमि में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पक्षपाती जमींदार भी थे. दिनकर का व्यक्तित्व घुटने लगा. इस घुटन से ऊबकर उन्होंने सब रजिस्ट्रारी की. उनकी राष्ट्रीय भावना यहाँ भी उनके लिए परीक्षा क्षेत्र प्रस्तुत करती रही. जल्दी-जल्दी स्थानांतर हुआ और पदोन्नति भी रुक गयी. एक ओर क्रान्ति और विद्रोह के उद्घोष उनके कंठ से निर्गत होने के लिए मचल उठते थे तो दूसरी ओर सरकारी नौकरी

में होने के कारण दमनचक्र में भी पिसना पड़ा था. स्वाधीनता संग्राम की लपटों को तेज करने के लिए जिन-जिन कवियों ने वाणी दी थी उनमें दिनकर का नाम भी प्रथम पंक्ति में आता है. इसी के परिणाम स्वरूप से सन् 1948 में बिहार सरकार के प्रचार विभाग के उपनिदेशक बने तथा राजकीय सम्मान के रूप में इन्हें सन् 1951 में राज्य सभा का कांग्रेसी सदस्य बनाया गया. सन् 1959 में पद्मभूषण की उपाधि तथा 1962 में भागलपुर विश्व-विद्यालय द्वारा डी० लिट० की उपाधि से विभूषित किये गये. सन् 1964 में वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बन गये जिसका निर्वाण इन्होंने बड़ी योग्यता से किया.

दिनकर विनयशील, कभी-कभी शीघ्र क्रोध में आने वाले, खतरों से नहीं घबराने वाले व्यक्ति थे. अपने को पचास करोड़ भारतीयों के साथ समझने वाले दिनकर न तो पदवी की आकांक्षा करते थे और न सम्मान की उपेक्षा ही रखते थे [11] पर यह महान आत्मा सन् 1974 में स्वर्ग सिधार गयी. दिनकर की काव्य कृतियाँ निम्नलिखित है --

बारदोली विजय (1928 ई० अप्राप्य), प्रणभंग (1929 ई०), रेणुका (1934 ई०) हुंकार (1938), रसवन्ती (1940), द्वन्द्वगीत (1940), कुरुक्षेत्र (1946 ई०), सामधेनी (1947 ई०), बापू (1947 ई०), इतिहास के आँसू (1951 ई०), धूप और धुआँ (1953), रश्मिरथी (1951), दिल्ली(1954 ई०), नीम के पत्ते (1954), नील कुसुम (1954 ई०), चक्रवाल (1956 ई०), कविश्री (1956 ई०), सीपी और शंख (1957), नये सुभाषित (1957 ई०), उर्वशी (1961 ई०), परशुराम की प्रतीक्षा (1963 ई०), कोयला और कवित्व (1964 ई०), मृति तिलक (1964 ई०), आत्मा की आँखें (1964 ई०), हारे को हरिनाम (1970 ई०).

उपर्युक्त कृतियों में से " प्रण भंग ", " रेणुका ", " हुंकार ", " इतिहास के आँसू ", " सामधेनी ", " परशुराम की प्रतीक्षा " ही वीर रस के अन्तर्गत आती है, " कुरुक्षेत्र " में विचार द्वन्द्व प्रस्तुत किया गया है, कहीं-कहीं वीरोचित उक्तियाँ भीष्म पितामह के माध्यम् से दर्शायी गयी हैं, अतः ये रचनायें ही विवेच्य काल की विषयवस्तु है.

प्रणभंग -

" प्रण भंग " पौराणिक घटना पर आधारित वीर रस का प्रमुख खण्डकाव्य है इसमें कवि ने महाभारत की एक छोटी सी घटना, जिसमें श्री कृष्ण की शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा, भक्त अर्जुन की रक्षा के लिए अन्त में उस प्रण का भंग, को लेकर इसकी कथावस्तु का सृजन किया है, पहले संस्करणों में " प्रणभंग " के साथ कवि की कोई अन्य मुक्तक रचनायें नहीं थीं परन्तु उस नवीन संस्करण में कवि ने इस खण्डकाव्य के साथ संग्रहीत किया है, कवि ने स्वयं कहा है " पुस्तक के अन्त में " क्षणिकाएँ " नाम से जो अट्ठाईस कवितायें संग्रहीत हैं, उनमें से ज्यादा तो ऐसी हैं जिनका रचना काल 1969-70 ई० है, अतएव " रश्मिलोक " के समान ही यह संग्रह भी मेरी सम्पूर्ण यात्रा पर प्रकाश डालता है, कवि अपने जानते रत्नों को काल के करतल पर रखता है, वराटिकाओं को वह रास्ते में ही छोड़ देता है, मैंने इन बिखरी वाटिकाओं की एक मंजूषा बना दी, यह धृष्टता हो सकती है , किन्तु साहित्य के इतिहास की सबसे थोड़ी सेवा हो जाना भी संभव है. "[12] प्रण भंग के माध्यम से कवि ने भीष्म के शौर्य का प्रदर्शन कराया है इसलिए वीर रस के उत्कृष्ट नमूने यत्र तत्र मिल जाते हैं.

रेणुका

दिनकर के इस काव्य संग्रह की कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर अधिक मुखर है. कवि ने भारतीय इतिहास के करुण एवं मार्मिक प्रसंगों की मार्मिक अभिव्यंजना की है. इसमें प्रगतिवादी रचनाएँ, राष्ट्रपरक रचनायें,

श्रृंगारिक रचनायें, अध्यात्मपरक रचनाएँ एवं प्रकृति विषयक रचनाएँ मिलती हैं. इसमें राष्ट्रीय भावना के अन्तर्गत कवि का वर्तमान के प्रति असंतोष और अतीत के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ है. कवि की राष्ट्रीय भावना संस्कृति के प्रति निष्ठा तथा वैचारिक क्रान्ति से अनुप्राणित है. यह चेतना दो रूपों में व्यक्त हुई. प्रथम अतीत के गौरव गाथा के रूप में तथा द्वितीय विद्रोही के रूप में. इसमें " पाटलीपुत्र की गंगा ", " करमै देवाय ", " हिमालय ", " मिथिला ", " ताण्डव " एवं " बोधिसत्व " आदि कवितायें वीर रस की हैं. इनमें कवि ने गांधीवादी अहिंसक नीति के प्रति अपना अविश्वास भी व्यक्त किया है. इस संग्रह में जहाँ एक ओर आग बरसने वाली क्रान्ति कारिणी रचनायें हैं तो दूसरी ओर कोमल अनुभूतियों से सिक्त प्रकृति सौन्दर्य को उद्घाटित करने वाली सरस एवं हृदय ग्राही रचनायें भी हैं.

हुंकार

" हुंकार " भी कवि की राष्ट्रीय कविताओं का प्रतिनिधि काव्य है जिनमें क्रान्ति और आक्रोश का स्वर प्रधान है. इस संग्रह की मूल चेतना क्रान्ति की चेतना कही जा सकती है. कवि क्रान्ति का नवीन एवं स्पष्ट उद्घोष करता है और उसे एक नाम " विपथगा " प्रदान करता है. जिसके आने जाने का कोई निश्चित समय, मार्ग या स्थान नहीं. इन कविताओं में कवि के अन्तर्मन का विस्फोटन हुंकार ही व्यक्त हुआ है. " स्वर्ग दहन ", " आलोकधन्वा ", " दाह एक ", " दिगम्बरि ", " अनल किरीट ", भीख " , विपथगा " वीर रस की रचनाएँ हैं.

सामधेनी

" सामधेनी " संग्रह भी राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह हैं. जिसमें कवि ने भावी यज्ञ की समिधा प्रस्तुत की है और इन कविताओं की समिधा द्वारा ही वह यज्ञाग्नि प्रज्ज्वलित की गयी है, जिसका पुरोधा कवि स्वयं है. सामधेनी का कवि मानव की संस्कृति का ह्रास देखकर दुखी है, धर्म और शौर्य के बुझे दीपक को प्रज्ज्वलित करने के लिए सकर्म, पौरुषवान व्यक्तियों

का आह्वान करता हुआ क्रान्ति को काली, शिवा और भवानी की प्रतिमूर्ति मानता है. इस संग्रह की महत्वपूर्ण वीरत्व का उद्घोष करने वाली रचनाएँ " जवानियाँ ", " आग की भीख ", " साथी " हैं. इस प्रकार इन तीन कविताओं को छोड़कर शेष कविताएँ राष्ट्रीय सांस्कृतिक चिन्तन पर आधारित हैं ।

इतिहास के आँसू

" इतिहास के आँसू " संकलन में " मगध-महिमा " के कुछ स्थलों के द्वारा पाकिस्तान की वैमनस्य नीति एवं काश्मीर समस्या का चित्रण भारत, यूनान, चन्द्रगुप्त सेल्यूकस के माध्यम से किया है. स्वतंत्रता से पूर्व भारत विशाल साम्राज्यवादी शक्ति से जूझता रहा और उस युद्ध में विजय के तत्काल उपरान्त ही पाकिस्तान का अप्रत्याशित आक्रमण सामने आया. कवि को चाणक्य के मुँह से इसका बीज मंत्र कहलाना पड़ा .[13] इस संग्रह में " मगध-महिमा ", " अतीत के द्वार ", " पाटलीपुत्र की गंगा से " आदि वीर रस की कविताएँ हैं.वास्तव में अतीत के माध्यम से व्यापक मानवतावाद की स्थापना ही इस कृति का मूल लक्ष्य है.

रश्मिरथी

महाभारत के वीर पात्र कर्ण को लेकर कवि ने रश्मिरथी की रचना की और इसके साथ ही इतिहास में उपेक्षित निम्न पात्रों को काव्य में नायकत्व का स्थान दिलाया. इसमें कर्ण के वीरत्व, दर्प, दानवीर, युद्धवीर का वर्णन कवि ने बड़ी ही कुशलता से दर्शाया है. वास्तव में यह वीर रस का एक उत्कृष्ट काव्य है.

परशुराम की प्रतीक्षा

यह दिनकर का प्रतिनिधि काव्य संग्रह है . इसकी मूल चेतना भारत पर चीनी आक्रमण से संबंधित है. वास्तव में यह चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि

पर लिखी गयी दिनकर जी की सशक्त रचना है. परशुराम वास्तव में उस शक्ति का प्रतीक है जो भारत की संस्कृति और शौर्य की रक्षा करने में एक साथ समर्थ है. इस संग्रह में कवि ने भारत के सोये हुए सिंहों को जगाने के लिए शंखनाद किया है और धर्म और खड्ग धारण का साथ-साथ निर्वाह किया है. इसमें युद्ध संबंधी कवि की नयी एवं पुरानी कवितायें संकलित हैं. " परशुराम की प्रतीक्षा " में कवि ने भारत की सांस्कृतिक परम्परा और उसके शौर्य के लिए परशुराम का आह्वान किया है. " जनता जगी हुई है ", " आपद्धर्म ", " आज कसौटी पर गांधी की आग है ", " जवानी का झंडा ", " जौहर " " हिम्मत की रोशनी " एवं " जवानियाँ " वीर रस की रचनाएँ हैं. इसका विस्तृत विवेचन मुक्तक एवं निबद्ध रचनाओं के अंतर्गत किया जायेगा.

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि दिनकर मूलतः ओज और पौरुष के कवि हैं. इन रचनाओं में " रेणुका ", " हुंकार ", " सामधेनी ", " इतिहास के आँसू ", " परशुराम की प्रतीक्षा " वीर रस के ओतप्रोत मुक्तक हैं. " प्रण भंग " एवं " रश्मिरथी " वीर रस के उत्कृष्ट खण्डकाव्य हैं. ये दोनों ही पौराणिक कथानक पर आधारित होते हुए भी ये आधुनिक चिन्तन से सम्बद्ध किये गये हैं. इसके अतिरिक्त रश्मिरथी में तो कवि ने निम्न जाति वाले कर्ण को नायकत्व का पद देते हुए सामाजिक साम्य को मुखरित किया. मुक्तकों में संग्रहीत रचनाओं में भी क्रान्ति और वीरता की भावना अत्यधिक दिखाई देती है. अतः हम कह सकते हैं कि दिनकर मूलतः वीर रस और राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं.

छायावाद युग के कवि

जयशंकर प्रसाद

प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक, भारतीय संस्कृति के व्याख्याता छायावादी काव्य चेतना के पुरस्कर्ता, महान् दार्शनिक कवि प्रसाद जी का जन्म सुँघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध एक प्रतिष्ठित घराने में संवत् 1946 में काशी में हुआ. इनके पिता का नाम था देवीप्रसाद.प्रसाद जी का परिवार तत्कालीन साहित्यिक, संगीत विषयक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए विख्यात था. उनके घर प्रायः नित्य ही साहित्यिक कार्यक्रम और साहित्यिक गोष्ठियाँ हुआ करती थी. इस वातावरण ने बचपन में ही प्रसाद के कवि हृदय को प्रेरित किया. बचपन में प्रसाद जी को तीर्थ यात्राएँ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ. प्रकृति के सुकुमार एवं विराट दृश्यों तथा तीर्थों की धार्मिक- सांस्कृतिक प्रेरणा का प्रभाव उन पर पड़ा. यह प्रभाव चित्राधार से लेकर कामायनी तक की रचनाओं में देखा जा सकता है. नौ वर्ष की अवस्था में इन्होंने अपने गुरु " रसमय सिंह " को ब्रज भाषा में सवैया लिखकर चकित कर दिया था.

प्रसाद जी को बचपन से ही विपत्तियों के झंझावात का सामना करना पड़ा. बारह वर्ष के बालक प्रसाद को छोड़कर पिता स्वर्ग सिधार हो गये. प्रसाद जी की स्कूली शिक्षा आठवें दर्जे तक ही हो पायी. घर पर ही उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, फारसी, वेद-उपनिषद, इतिहास, पुराण और दर्शन का अध्ययन किया. अग्रज की मृत्यु के उपरान्त प्रसाद जी के कंधों पर व्यापार का सारा भार आ गया. दो वर्ष पहले ही माता का स्वर्गवास हो गया. इन आघातों के साथ एक-एक बाद एक पत्नी की मृत्यु होने के कारण इन्हें तीन विवाह करने पड़े. नियति के इन भीषण आघातों ने प्रसाद जी के हृदय को व्यथाओं और करुणा से भर दिया. पन्द्रह वर्ष की आयु से वे काव्य सृजन करने लगे. संवत् 1963 से

" भारतेन्दु " में प्रथम बार उनकी कविता प्रकाशित हुई. इसके बाद उन्हीं की प्रेरणा से निकले " इन्दु " मासिक में नियमित रूप से उनकी कविता, कहानी, नाटक और निबन्ध प्रकाशित होने लगे. व्यायाम का शौक था. वेशभूषा अत्यन्त सादी थी. युवावस्था में वे ढाका की मलमल का कुर्ता और शान्तिपुरी धोती पहने के बाद में खद्दर का उपयोग करते थे. वे शैव थे और अपने सम्प्रदाय पर उन्हें पूर्ण आस्था थी. शिवरात्रि और होली के उत्सव बड़े धूमधाम से मनाते थे. सन् 1932 में प्रेमचन्द जी ने " हंस " का आत्मकथा अंक निकाला. प्रेमचन्दजी के बहुत आग्रह करने पर प्रसाद जी ने अपनी आत्मकथा पद्य-बद्ध भेजी थी. इसमें उनकी मौन व्यथा, साधना और संघर्ष के थपेड़ों से साहस के साथ जूझने की भावना अभिव्यक्त हुई हैं. [14] इस मौन व्यथा का चित्रण प्रसाद जी के काव्यों में हुआ है; वे अपनी व्यथा को व्यक्त करना नहीं चाहते थे फिर भी उनके साहित्य के पात्रों के माध्यम से यह व्यथा अभिव्यक्त हो जाती है.

हिन्दी काव्य में छायावादी युग के प्रवर्तन का श्रेय निश्चित रूप से प्रसाद जी को है. वे कविता की इस नवीन धारा के प्रवर्तक ही नहीं अपितु उसके सर्वश्रेष्ठ कवि हैं. प्रसाद जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं यथा... नाटक, कहानी, निबंध आदि का सर्जन किया. उन्होंने साहित्य की जिस विधा का भी संस्पर्श किया उसे उच्चता के शिखर पर पहुँचाया. प्रसाद जी का अन्तिम जीवन रोग शय्या पर ही व्यतीत हुआ. निरन्तर दैवी आपत्तियों के थपेड़ों ने उनके जीवन को जर्जरित कर दिया था. 15 नवम्बर सन् 1937 को यह नश्वर संसार को छोड़कर ये चिर निद्रा में लीन हो गये. इनकी काव्य रचनायें इस प्रकार हैं...

" कानन कुसुम " (सन् 1912), " महाराणा का महत्व " (सन् 1914), " चित्राधार " सं. 1975), " झरना " (सन् 1918), " प्रेम पथिक " (सं. 1970), " आँसू " (सं. 1981), " करुणालय (सन् 1923), " लहर " (सन् 1935), कामायनी " (सन् 1935) है.

विवेच्य काल में आने वाली वीर रस की रचना केवल " लहर " में संग्रहीत " पेशोला की प्रतिध्वनि ", " शेर सिंह का शस्त्र समर्पण ", " प्रलय की छाया " है जो विचार का विषय है. " महाराणा का महत्व " शीर्षक खण्डकाव्य हमारी आलोच्य परिधि से पूर्व का है अतः यहाँ केवल लहर की उपर्युक्त कविताओं पर विचार किया जाएगा.

" लहर " में संग्रहीत अधिकांश कविताएँ प्रेम, सौन्दर्य, रहस्य और प्रकृति संबंधी विषयों से संबंधित है . अंत में चार लम्बी कवितायें " अशोक की चिन्ता ", " शेर सिंह का शस्त्र समर्पण ", " पेशोला की प्रतिध्वनि ", " प्रलय की छाया " वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है. " पेशोला की पृष्ठभूमि " के माध्यम से मेवाड़ के प्राचीन गौरव का स्तवन किया गया है. इसमें भारतवासियों के हृदय में मेवाड़ के प्रति गौरव का भाव जगाने का प्रयास है एवं वर्तमान शोचनीय स्थिति से उन्हें मुक्त होने का संदेश भी दिया है.

" लहर " में प्रकृति की गंभीर एवं सौन्दर्यमयी पृष्ठभूमि पर राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना स्थापित की गयी है. " शेर सिंह का शस्त्र समर्पण " में अंग्रेजों एवं सिक्खों के युद्ध का वर्णन, शेर सिंह के वीरत्व ओजपूर्ण उद्‌गारों का वर्णन है. " प्रलय की छाया " में गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण किया गया है. नाटकों में संग्रहीत वीर रस के मुक्तकों के बारे में पूर्ववर्ती तृतीय अध्याय में विवेचन किया जा चुका है.

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि जयशंकर प्रसाद मुख्यतः छायावादी काव्य चेतना के कवि हैं. वीर रस के उद्‌बोधन गीतों को स्थान इन्होंने अपने नाटकों में दिया है. उपर्युक्त वीर रस की कोटि में आने वाली तीनों रचनाओं में कवि ने ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाया है. अतः कहा जा सकता है कि प्रसाद जी मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं ।

सुभद्रा कुमारी चौहान

भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता का प्राण फूंकने वाली सुभद्राकुमारी चौहान आधुनिक हिन्दी लेखिकाओं में गौरवपूर्ण स्थान की अधिकारिणी है. इनका जन्म सन् 1905 में प्रयाग के निहालपुर गाँव में एक क्षत्रिय परिवार में नागपंचमी के दिन हुआ था. प्रयोग के ही क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज में इन्होंने शिक्षा ग्रहण की. 15 वर्ष की आयु में इनका विवाह अध्ययन प्रिय एवं देश भक्त ठाकुर लक्ष्मण सिंह से हो गया, यह विवाह निश्चय ही एक तेज का दूसरे तेज से सम्मिलन था. जात पात और पर्दे की कुप्रथाओं के विरूद्ध 1919 में ही उन्होंने विद्रोह का डंका बजा दिया था.वे एक सच्ची प्रगति-शील महिला थी. और लक्ष्मणसिंह के रूप में उन्हें उसी जोड़ का प्रगति पुरूष प्राप्त हुआ था. इस तरह यह परिवार अपने ही घर से क्रांति का बिगुल बजाता हुआ राष्ट्र तथा समाज के स्वातंत्र्य समर में कूद पड़ा . " [15]
लक्ष्मण सिंह ने वकालत छोड़कर जबलपुर से प्रकाशित होने वाले " कर्मवीर " में संपादक के पद पर कार्य किया. "कर्मवीर " में आने का अर्थ ही था स्वातंत्र्य युद्ध में पूरी तरह से उतर जाना, लक्ष्मण और सुभद्रा दोनों ही पक्के योद्धा की भाँति मैदान में उतर पड़े, दोनों ही भारतीय कांग्रेस के सदस्य बने, दोनों ही पं. सुन्दरलाल के साथ मंचों पर भाषण देने लगे. विवाह के उपरान्त कुछ समय तक तो इनके अध्ययन का क्रम चलता रहा किन्तु 1921 के लगभग देश में राष्ट्रीय असहयोग के जोर पकड़ने पर इन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और देश के राजनीतिक कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगीं. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 1922 का झण्डा सत्याग्रह विशेष महत्व रखता है.

14 अगस्त को हुए झण्डा सत्याग्रह में सुभद्रा कुमारी ने सक्रिय भाग लिया. " सुभद्रा जी के संदर्भ में इस आंदोलन का महत्व यह है कि वे राष्ट्र के पहले सत्याग्रही थी पहिली महिला सत्याग्रही थी, तपस्वी सुन्दरलाल जी के साथ ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. सारे देश में

यह गिरफ्तारी गूंज उठी, " टाइम्स ऑफ इंडिया " ने उनके ओजस्वी भाषण को सुनकर उन्हें " वोकल सरोजिनी " कहा. [16] राजनीति की तरफ इतना झुकाव होने पर भी साहित्य रचना से ये विमुख नहीं हुई, जेल में बैठकर भी साहित्य रचना करती रही. सन् 1945 में 15 फरवरी को बसंत पंचमी के दिन कार दुर्घटना में ये अकाल मृत्यु को प्राप्त हुई.

सुभद्रा की कवितायें .... मन की सहज अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है ..... अपनी साहस और सहजता में सुभद्रा की कविता लोक काव्य के निकट पहुँच जाती है. मन के भावों को बिना बनाये संवारे अपने सहज स्वाभाविक रूप में उन्होंने व्यक्त कर दिया है. उसमें प्रेमिका का निवेदन है, ईर्ष्या है, मान-अभिमान है, माँ की ममता और त्याग और बलिदान की भावना है और एक जननायक का ओजस्वी आह्वान है. " [17]
काव्य और कहानी दोनों ही प्रकार की रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम, देश-भक्ति, समाज-सेवा और पारिवारिक समस्याओं को उठाकर उनके विविध पक्षों का बड़ी गंभीरता से विवेचन प्रस्तुत किया गया है. व्यक्तिगत अनुभवों पर ही आधारित होने के कारण इन कविताओं की सजीवता और मार्मिकता भी दर्शनीय है. मुकुल और बिखरे मोती पर इन्हें केसरिया पुरस्कार मिला है. उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं ...

" त्रिधारा - मुकुल ﴾ सन् 1930 ﴿.
कहानी संग्रह - " बिखरे मोती ﴾1932﴿, उन्मादिनी ﴾1934﴿, सीधे सादे चित्र ﴾1947 ﴿,

इनकी वीर रस पूर्ण रचनाएँ केवल मुकुल संग्रह में मिलती हैं. अतः यहाँ केवल इसकी कृतियों का ही विचार किया जा रहा है.

मुकुल -

" मुकुल " सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है. इसमें कवयित्री ने ऐतिहासिक पीठिका के माध्यम से समसामयिक जनता को जागरूक करने की चेष्टा की है. देश की नारियों को पुकारों

के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का संदेश दिया है. रानी लक्ष्मीबाई में " दुर्गा " के दर्शन करती है और " वीरता की अवतार " तक की संज्ञा से विभूषित करती है. विजयदशमी में कवयित्री ने नारियों के लिए बल, तेज का वरदान मांगा है. देश के सुप्त पुरुषों को नारियों के माध्यम से व्यंग्यपूर्ण शैली में जगाने का प्रयास भी उनकी " बिदाई " शीर्षक कविता में मिलता है. कवयित्री स्थान- स्थान पर स्त्रियों के बलिदानों के माध्यम से पुरुषों को सचेत करती है और स्वयं भी सिंहनी के समान हर समय अपना शीश कटाने को भी तत्पर रहती हैं. " झांसी की रानी " लक्ष्मीबाई इनकी वीर रस पूर्ण उत्कृष्ट रचना है जो सर्वाधिक लोकप्रिय रही है. अतीत के माध्यम से भारतीयों में नवीन चेतना भरने का कार्य भी कवयित्री ने किया है. यह कृति सुभद्रा जी की राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत एवं वीरत्व का ज्वलन्त उदाहरण है.

वियोगी हरि

भारतीय संस्कृति के उद्गाता, गांधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक साम्प्रदायिकता विरोधी और आधुनिक हिन्दी काव्य में सतसई परम्परा के प्रवर्तक श्री हरिहरप्रसाद द्विवेदी " वियोगी हरि " का जन्म संवत् 1953 में छतरपुर राज्य के एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ. इनके पिता की मृत्यु बाल्यकाल में ही हो गयी इसलिए पालन-पोषण इनके नाना के यहाँ हुआ. छतरपुर में इन्होंने हाईस्कूल पास किया. दर्शनशास्त्र से ही रुचि होने के कारण क्रमशः कृष्ण भक्ति की ओर आकृष्ट हुए. छतरपुर की महारानी " युगलप्रिया " के सान्निध्य में इनका यह भक्ति का रंग और गहरा हुआ. सन् 1934 तक इन्होंने अनेक साहित्यिक ग्रंथों का लेखन एवं संपादन किया और साथ ही सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर भी अनेक पुस्तकें लिखीं. परन्तु उसके बाद ये गांधी जी की प्रेरणा से प्रधानतः हरिजन सेवा कार्य करते रहे. वियोगी हरि के ब्रजभाषा की मूल वाणी भक्ति और देशप्रेम की द्विविध धारा है और इन दोनों का एक केन्द्र है

सांस्कृतिक चेतना. इन्होंने श्रीकृष्ण और उनके भक्तों के विषय में सुंदर रचना की है. इनकी भक्ति में सहजता है, कृत्रिमता नहीं और इस दृष्टि से ये अलंकार कवि न होकर भाव कवि हैं.

इनकी भाषा व्रजभाषा है परन्तु विभिन्न रचनाओं में भाषा के भिन्न-2 रूप देखने को मिलते हैं. बुंदेलखण्ड का प्रभाव इनकी भाषा पर स्पष्ट है साथ ही उसमें कलात्मक एकरूपता का भी अभाव है. फिर भी विषय के अनुकूल माधुर्य, ओज एवं प्रसाद गुणों का परिपाक इनकी रचनाओं में सर्वत्र है. इनकी मौलिक कृतियाँ इस प्रकार हैं ...

साहित्य विहार ॥सन् 1922 ई०॥, छद्मयोगिनी नाटिका ॥ सन् 1922॥, ब्रज माधुरी ॥ 1923 ई०॥, कवि कीर्तन ॥ 1923 ई०॥, सूरदास की विनय पत्रिका की टीका ॥1924 ई०॥, वीर सतसई ॥1927 ई०॥, विश्व धर्म ॥1930 ई०॥ . हमारे अध्ययन के अन्तर्गत उनकी एक मात्र काव्य कृति " वीर सतसई " ही आती है, अतः यहाँ केवल उस पर ही विचार किया जायेगा.

वीर सतसई

" वीर सतसई " राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण उत्कृष्ट कृति है, इसमें वीर रस से परिपूर्ण दोहों का सुन्दर संग्रह सुसंपादित रूप में हुआ है. वियोगी हरि ने ब्रजभाषा में वीर भावना की अभिव्यक्ति कर साहित्य में नवीन दिशा का द्वार खोल दिया. वियोगी हरि " वीर सतसई " में प्राचीन वीरों की विरुदावली बखान करते हुए वर्तमान निर्बल जाति के जीवन में साहस का स्फुरण करना चाहते हैं. उन्होंने युद्धवीर, दानवीर, दयावीर आदि वीरता के विविध रूपों की चर्चा की है. महाभारत के जगमगाते हुए शोणित से लथपथ हुई बुंदेलखण्ड की भूमि में घटित होने वाली अनेक घटनाओं को दुहराया है. वीरोचित उक्तियाँ तथा उत्साहपूर्ण जीवनादर्श आज भी जाति को उत्तेजित करने की सामर्थ्य रखते हैं. कवि के हृदय

में जन्मभूमि के प्रति अचल भक्ति है और देशहित प्राण विसर्जन करने की एक उदण्ड भावना परिव्याप्त है. यही नहीं ऐतिहासिक वीर पुरुषों और नारियों के प्रति कवि ने अपने हृदय का प्रशस्तिभाव व्यक्त किया है इनमें घटनाओं का वर्णन न होकर उल्लेखमात्र है. देश की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण भी किया है. और देश के नवयुवकों एवं समाज के सभी वर्गों को देशोद्धार के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा दी गई है. वास्तव में वीर सतसई " में वीर रस की अजस्त्रधारा प्रवाहित हुई है.

गुरु भक्त सिंह भक्त

भारत की अतीत गरिमा का गान करने वाले प्रसिद्ध कवि गुरु भक्त सिंह भक्त का जन्म 7 अगस्त सन् 1893 को पृथ्वीराज चौहान के वंशज ठाकुर कालिकाप्रसाद सिंह के घर हुआ. इन्होंने बी० ए०, एल० एल० बी० तक विधिवत शिक्षा पाई. अनेक रियासतों के दीवान पद पर कार्य किया तथा आजमगढ़ नगरपालिका के कार्याधिकारी भी नियुक्त रहे. अब आप अवकाश ग्रहण कर चुके हैं. काव्य के प्रति अनुराग इनको पिता से विरासत के रूप में मिला. इनकी कीर्ति का आधार दो ऐतिहासिक महाकाव्य " नूरजहाँ " एवं " विक्रमादित्य " हैं. ये दोनों ही काव्य ग्रंथ महाकाव्योचित गरिमा से युक्त हैं. गुरुभक्त सिंह जी ने इसके निर्माण में व्यापक अध्ययन, गंभीर मनन, शोध और कवि प्रतिभा का परिचय दिया है. कवि ने इन प्रबन्धों में तत्कालीन इतिहास को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है ।

गुरुभक्त सिंह भक्त जीवन भर राजकीय सेवा में रहे अतः इसी कारण राष्ट्रीय संग्रामों में सक्रिय भाग न ले सके, किन्तु फिर भी " नूरजहाँ " एवं " विक्रमादित्य " में भारत के स्वर्णिम अतीत के भव्य चित्र अंकित कर अपनी हृदयस्थ राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है. प्राचीन तथा मुगलकालीन भारत के चित्र इन्होंने एक ही तन्मयता से ही प्रस्तुत किए हैं.

इन प्रबन्धों के अतिरिक्त इनकी स्फुट कविताओं के संग्रह भी हैं जिसमें ग्रामीण शोभा, ग्राम्य जीवन, लता, पुष्प, पशु-पक्षी आदि का बड़ी आत्मीयता और मनोयोग पूर्वक चित्रण हुआ है. इनकी भाषा में अपूर्व लालित्य एवं प्रवाह है.

अब तक प्रकाशित इनके काव्य ग्रंथ निम्नलिखित हैं...

" सरस सुमन " ‌॥1925 ई0॥, " कुसुम कुंज " ॥ 1929 ई0॥, " वंशी ध्वनि " ॥1930॥, " वनश्री " ॥1935 ई0॥, " नूरजहाँ " ॥1935॥, " विक्रमादित्य " ॥ 1944 ई0 ॥, प्रेमपाश नाटक " ॥1920 ई0 ॥, " रघिया " ॥1922 ई0 ॥.

प्रस्तुत अध्ययन की परिधि के अन्तर्गत उनकी " विक्रमादित्य " महाकाव्य ही आता है.

विक्रमादित्य -

" विक्रमादित्य " ऐतिहासिक महाकाव्य है. इसकी मुख्य घटना संस्कृत के " देवी चन्द्रगुप्त " नाटक पर आधारित है. [18] जिसमें विक्रमादित्य, रामगुप्त और ध्रुवदेवी की कहानी को कवि ने वीर सेनानी, शक्तिवान, साहसी, शीलवान, सहनशील आदि गुणों से संवारा है. इसमें वीरत्व के साथ-2 श्रृंगार की अजस्त्र धारा भी प्रवाहित हुई है. इसमें चन्द्रगुप्त के युद्धवीर एवं राष्ट्रप्रेमी दोनों रूपों में चित्रण हुआ है. इसके अतिरिक्त राष्ट्र के प्रति बलिदान की बलवती भावना भी इस काव्य में दृष्टिगोचर होती है ।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि छायावादी युग में आने वाले प्रसाद, वियोगी हरि, सुभद्राकुमारी चौहान, गुरुभक्त सिंह भक्त आदि कवियों ने छायावादी काव्य चेतना से अनुप्राणित होने

पर भी वीर काव्यों की रचनाओं में इस चेतना की विषयवस्तु की चेतना से हटकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को आधार बनाया. इस काव्य खण्ड ने शक्ति, सिद्धराज, विकट भट एवं प्रण-भंग दिया. गुरुभक्त सिंह भक्त के " नूरजहाँ " में छायावादी काव्य चेतना तथा शिल्प का सुंदर समावेश हुआ है. इसमें वीर रस केवल " शेर अफगन " के माध्यम से ही आया है परन्तु यह हमारे अध्ययन के बाहर की रचना है क्योंकि यह श्रृंगार रस की कृति है. मुक्तक रचनाओं एवं खण्ड काव्यों में नयी छन्द योजना शैली की नवीनता शब्द रचना की प्रवीणता आदि प्रवृत्तियाँ मिलती हैं. " वीर सतसई " की रचना करके कवि वियोगी हरि ने सदियों से चली आ रही ब्रजभाषा में श्रृंगार परक रचनाओं के स्थान पर वीर रस की रचना की. इसके अतिरिक्त छायावादी काव्य चेतना से अनुप्राणित " प्रसाद " की " पेशोला की प्रतिध्वनि ", " शेर सिंह का शस्त्र समर्पण ", " प्रलय की छाया " आदि वीरत्वपूर्ण रचनाएँ इस काल खण्ड की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं. इसके अतिरिक्त सुभद्रा कुमारी चौहान ने तो राष्ट्रीय चेतना एवं वीरवृत्ति की कविता " झांसी की रानी " लिखकर भारतीयों में ओज एवं वीरत्व का संचार किया.

पूर्ववर्ती विवेचन में हमने कवियों के आधार पर वर्गीकरण किया है परन्तु द्विवेदी युग से चले आ रहे कवियों ने इस युग में भी अपनी रचनायें दीं जो कालक्रम की दृष्टि से छायावादी युग में आती हैं इसी प्रकार इस युग में आये कवियों की रचनायें परवर्ती युग प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद में भी मिलती हैं. समग्र विवेचन से यह तथ्य सामने आता है कि इन कवियों ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण से प्रभावित होकर अपने अतीत का गौरव गान किया जैसा कि पूर्ववर्ती विवेचन में दर्शाया गया है.

प्रगतिवाद युग के कवि और उनके वीर काव्य

यह पूर्ववर्ती अध्याय में लक्ष्य किया जा चुका है कि छायावादी युग में जबकि प्रेम एवं सौन्दर्य की रचनायें प्रधान थीं तो प्रगतिवादी युग में कवियों ने समाज के सबसे दलित एवं निर्बल वर्ग को अपने काव्यों का नायक बनाया. वर्ग वैषम्य से उत्पन्न परिस्थिति के कारण सर्वहारा नंगे भूखे दुःखी प्राणियों के चित्र उपस्थित किए. इस वाद में दो प्रकार की रचनायें प्रकाश में आती हैं.... एक तो सामान्य राष्ट्रीय और सामाजिक कवितायें तो दूसरे मार्क्सवादी विचार धारा से अनुप्रेरित रचनायें हैं. इस पहली प्रकार की कविताओं में देश भक्ति के उद्गार, अतीत, वर्तमान देशभक्तों एवं राष्ट्र नायकों की प्रशस्तियाँ , देश की वर्तमान राजनैतिक एवं सामाजिक अवनति पर क्रंदन करने वाली रचनायें आती हैं तो दूसरी प्रकार की रचनाओं मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित आर्थिक संकट के परिपार्श्व में वर्तमान समाज व्यवस्था को रखकर प्रगति का पथ निर्धारित करने वाली. अतः इस प्रकार हम कह सकत इस युग में काव्य चेतना को एक और तो मार्क्सवादी तथा दूसरी ओर पहले से चली आती हुई राष्ट्रीय सांस्कृतिक अभियानों से जुड़ा पाता हैं. इस युग में आने वाले कवि " शिवमंगल सिंह " सुमन ", श्याम नारायण पाण्डेय, मलखान सिंह " सिसौदिया ", कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, द्वारिका प्रसाद मिश्र एवं मोहनलाल महतो " वियोगी " हैं, जिनका क्रमशः यहाँ विवेचन किया जा रहा है.

शिवमंगल सिंह " सुमन "

युग बोध एवं राष्ट्रीय चेतना के संवाहक " सुमन " जी का जन्म नागपंचमी सन् 1916 को परिहार क्षत्रिय वंश, झगरपुरा ग्राम जिला उन्नाव उत्तर प्रदेश में हुआ. गहरवाड़ वंशीय माता के दूध से उनका विवर्द्धन हुआ, रीवां राज्य की सेना के जनरल उनके पिता ठाकुर साहब बख्शसिंह के पौरूष

ने उन्हें दृढ़ता और तेजस्विता प्रदान की. उनके पितामह ठाकुर बलराम सिंह स्वयं रीवाँ सेना में कर्नल थे और प्रपितामह ठाकुर चन्द्रकान्त सिंह को सन् 1857 की क्रान्ति में सक्रिय भाग लेने और वीरगति प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ था. " सुमन " जी की प्रारंभिक शिक्षा रीवाँ राज्य की छावनी में हुई और समय पाकर 1930-31 में नवीं कक्षा के छात्र होते हुए भी वे गांधी जी द्वारा चलाये गये आन्दोलन, धरसाना मार्च नमक सत्याग्रह के साक्षी रहे. खादी, तकली और आन्दोलन उनके प्राणों को स्पन्दित करने लगा, चेतना में प्रवाहित होने लगा. मैट्रिक करते -2 1932 तक इनका सम्पर्क क्रान्तिकारियों से भी स्थापित हो गया और चन्द्रशेखर " आजाद " के दल के सदस्यों को पिस्तौल कारतूस पहुँचाने का कार्य करने लगे.

शिवमंगल सिंह " सुमन " का कण्ठ तो दसवीं कक्षा के विद्यार्थी के रूप में फूटा था जब उन्होंने अपने स्कूल के हेडमास्टर श्री दानी को लेकर एक कविता रच डाली और उसे कवि सम्मेलन के मंच से श्रोताओं के बीच सुना भी दिया, परन्तु कविता स्वर का वास्तविक उन्मेष कालिज पहुँचने पर ही हुआ. उन्हीं के शब्द में ...

" जब कालिज में नाम लिखाया तो नज्जारा बदल गया था. खून की रवानगी के कारण हरदम हरारत का अनुभव होता था, हर दृश्य लुभावना लगता था । "[19]

कविताओं के संग्रह प्रकाशित होने से पहले " सुमन " जी की कवितायें पत्र पत्रिकाओं में स्थान पाने लगीं.

एक सच्चे कलाकार की भाँति सुमन जी ने मनुष्य के सामाजिक संबंधों में कोमलता, एकात्मकता तथा संवेदनशीलता उत्पन्न कर समाज को नया जीवन प्रदान करने का प्रयत्न किया है. इन कविताओं में आये असन्तोष और क्रान्ति का आह्वान करने का स्वर उनकी जागरूकता का प्रमाण उपस्थित करता है. सोवियत रूस के प्रति उनका झुकाव उनके विचारों को

रूसी जन क्रान्ति और समाजवाद के संदर्भ प्रदान करता है. जीवन के प्रति उत्साहपूर्ण दृष्टि ने सुमन जी की कविताओं में सहज ही उल्लास की अर्चना की है, उन्हें प्रकृति के समरस बनाया है, संस्कृति और संस्कारों के प्रति लगाव उत्पन्न किया है.

सन् 1940 में एम0 ए0 हिन्दी प्रथम श्रेणी में पास की तथा 1950 में " गीतिकाव्य का उद्भव और विकास और हिन्दी साहित्य में उसकी परम्परा " नामक विषय पर डी0 लिट0 की उपाधि धारण की. 1942 में विक्टोरिया कालेज ग्वालियर में हिन्दी प्रध्यापक, 1952 से 1954 तक माध्व कालेज उज्जैन में हिन्दी विभागाध्यक्ष, 1956 से 1961 तक नेपाल में भारतीय राजदूतावास के सांस्कृतिक सचिव के रूप में पद भार ग्रहण किया. इनकी कविताओं में लोक कल्याण की भावना के साथ-साथ देश के सांस्कृतिक वैभव और महान व्यक्तियों के प्रति सम्मान की भावना उनकी कविताओं में महत्वपूर्ण स्थान पाने लगी. युग बोध और राष्ट्रीय चेतना का सम्मिलित सन्निवेश उनकी कविताओं में दीख पड़ा. वे अपने काल के संवेदन से जितने जुड़े हुए हैं उतने ही समकालिक अथवा निकट पूर्ववर्ती कवियों से भी वह कहीं न कहीं समीपता का अनुभव करते हैं. इनके निम्नलिखित काव्य संग्रह प्रकाश में आये हैं --

" हिल्लोल " ‍‍॰ सन् 1940 ‍॰, " जीवन के गान " ‍॰सन् 1941‍॰, प्रलय सृजन " ‍॰ सन् 1944‍॰, विश्वास बढ़ता ही गया ‍॰ सन् 1955 ‍॰, " पर आँखें नहीं भरी ‍॰ सन् 1866 ‍॰, " विंध्य हिमालय ‍॰ सन् 1966 ‍॰,

कवि की कृतियों में प्रेम, सौन्दर्य, देश प्रेम और राष्ट्रीय जागरण की कवितायें भी है परन्तु हम उन्हें केवल वीर रस तक ही सीमित करते हुए उन्हीं रचनाओं का वर्णन करेंगे जो वीर रस की कोटि में आती हैं. विवेच्य काल में यद्यपि इनके " हिल्लोल ", " जीवन के गान " , " प्रलय सृजन " एवं " विश्वास बढ़ता ही गया " आते हैं परन्तु वीर रस की

रचनाएँ केवल " विश्वास बढ़ता ही गया " में ही संकलित हैं जिनका विवेचन यहाँ द्रष्टव्य है.

" विश्वास बढ़ता ही गया " संग्रह की कविताओं में मुख्यतः कवि का संघर्षशील जीवन, उसका अडिग विश्वास, साहस तथा जीवन के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ है. स्वतंत्रता की प्राप्ति एक मात्र लक्ष्य समझ कर कवि त्याग , बलिदान की महिमा का गान करता है. उसका स्वर अंग्रेजों के लिए आक्रोश पूर्ण हो उठता है और वह राष्ट्र का शोषण करने वाले अंग्रजों को उनकी करणी का फल देने की भीषण प्रतिज्ञा करता है और भारतवासियों में जागरण का मंत्र फूंकता हुआ साम्राज्यवाद को नष्ट करने की प्रेरणा देता है. स्वतंत्रता की चिनगारी को सदा प्रज्ज्वलित रखने का दायित्व देश के नवयुवकों पर रखता हुआ कवि उन्हें सदा सजग रहने की प्रेरणा देता है. जीवनास्था से पूर्ण यह संग्रह वीरत्व की दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं. " आज देश की मिट्टी बोल रही है " नयी आग है, नई आग है " आदि वीर रस की कृतियाँ हैं.

श्याम नारायण पाण्डेय

आधुनिक हिन्दी काव्य में वीर रस की ओजस्वी धारा प्रवाहित करने वाले महाकवि पंडित श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण शुक्ल 6, संवत् 1764 में हुआ. इनके पिता का नाम रामाज्ञा पाण्डेय एवं माता का नाम वाता सी देवी था. इनके दो भाई एवं तीन बहनें हैं. पिता रामाज्ञाजी मध्यवर्गीय कृषक थे, प्रसिद्ध ढोलकवाद एवं अधिक पढ़े लिखे नहीं थे. श्याम नारायण पाण्डेय पर पिता का स्नेह अपने अग्रजों एवं बहनों से ज्यादा था. पिता का स्वर्गवास छोटी ही उम्र में हो गया. पिता के निधन के उपरान्त इनकी माता ने अनेकों कष्ट सहकर इनका लालन पालन किया. माता वातासी देवी धार्मिक प्रवृत्ति की अधिक थी. वे एकादशी के व्रत करतीं, हरवर्ष गंगा स्नान एवं प्रतिदिन जप पूजा पाठ करतीं. माता की

इस धार्मिक प्रवृत्ति का प्रभाव पुत्र श्याम नारायण पाण्डेय पर सबसे अधिक पड़ा । [20] इसके अतिरिक्त घर में संगीत, शिव पूजन, विद्याध्ययन की परम्परा, देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा ने भी इन पर प्रभाव डाला. और यह प्रभाव उनके काव्य में भी झलकता है. स्कूल से आकर ये अपने चाचा विष्णुदत्त पाण्डेय जी की पूजा में सम्मिलित हो जाते . सन् 1924 में हिन्दी मिडिल एवं सन् 1925 में उर्दू की मिडिल परीक्षा पास की. इसके उपरांत संस्कृत का अध्ययन किया. पहले इन्होंने मऊ में ही शिक्षा ली. तदुपरान्त ये काशी पढ़ने के लिए गये और वहाँ से संस्कृत की परीक्षा पास की.

विद्यालय की पढ़ाई के समय ही ये तुक बंदी करने लग गये. काशी में हरिऔध जी से इन्होंने साहित्य सृजन की शिक्षा प्राप्त की. इनकी छत्रछाया में ही पाण्डेय जी का साहित्यिक व्यक्तित्व बीज से वृक्ष बना, इन्होंने गाजीपुर, आजमगढ़, इलाहाबाद, दिल्ली आदि कई साहित्य सम्मेलनों में भाग लिया एवं नई पीढ़ी के कई कवियों एवं लेखकों को प्रोत्साहित किया. लखनऊ की साहित्यिक प्रदर्शनी में इनकी " हल्दीघाटी " की पाण्डुलिपि को 2000/- का देव पुरस्कार प्राप्त हुआ. पंडित नारायण चतुर्वेदी जी की कृपा से " हल्दीघाटी " सजधज के साथ प्रकाशित हुई. आचार्य जी पाण्डेय जी के अत्यधिक प्रशंसक रहे. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रेरणा से इन्होंने " जौहर " महाकाव्य का सृजन किया.

पाण्डेय जी की प्रथम कविता काशी की " राम " पत्रिका में छपी जो अ अब अप्राप्य है. अपनी कृतियों पर ये सम्मानित भी किये गये. " हल्दी घाटी " को देव पुरस्कार तो प्राप्त हुआ ही, काशी नागरी सभा ने " जौहर " को श्रेष्ठ ग्रंथ घोषित किया. साहित्य सेवा के उपलक्ष में इन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हुए. ये संस्कृत, उर्दू, हिन्दी के अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, छंदशास्त्र, काव्य शास्त्र, अलंकार शास्त्र आदि के ज्ञाता भी हैं. इनके शब्द केवल विशुद्ध भारतीय हृदय को छू ही नहीं जाते अपितु उनके भीतर अद्भुत आंदोलन, एक अद्भुत आकांक्षा, एक बहु दिन से अपरिचित बल

के अस्तित्व का ज्ञान उत्पन्न करते हैं - एक शब्द में जीवन दान करते हैं. इनके भाव आधुनिक, शब्द ओजस्वी, कल्पना रोमांचकारिणी है, पर नवीनता का संदेश देते हुए भी हमें अपने-अपनेपन की याद दिलाती हैं, युग का संदेश सुनाते हैं, वर्तमान समस्याओं का समाधान करने के लिए उत्सुक और योग्य भारतीय बनाते हैं. उनकी कविता की मूल भावधारा वीर है और वीर रस का अखण्ड प्रवाह इनकी कृतियों में दिखाई देता है. अब तक प्रकाशित इनकी रचनायें निम्नलिखित हैं ...

हल्दीघाटी (सन् 1939), जौहर (सन् 1944), तुमुल (सन् 1948), जय हनुमान (सन् 1956), गोराबध (सन् 1956), शिवाजी (सन् 1970), आरती (1938).

हमारे विवेच्य काल में इनकी " हल्दीघाटी ", " जौहर ", " तुमुल ", " जयहनुमान ", गोराबध " आदि रचनाएँ आती हैं. " शिवाजी " महाकाव्य भी वीर रस की सशक्त रचना है परन्तु यह हमारे विषय के सीमा क्षेत्र के बाहर आती है इसलिए इसको छोड़कर बाकी रचनाओं पर यहाँ विचार किया जायेगा.

हल्दीघाटी

" हल्दीघाटी " वीर रस प्रधान महाकाव्य है. इसका कथानक कवि ने इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी के रोमांचकारी युद्ध से लिया है. इसमें कवि ने चित्तौड़ नरेश महाराणा प्रताप की आत्म बलिदान पूर्ण शौर्य की गौरव गाथा गायी है जिसने स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्ट सहे, जंगलों की खाक छानी, गुफाओं में रहे, घास तक की रोटियाँ खाईं और शारीरिक और मानसिक कष्टों को सहन किया. कवि ने प्रताप को अनुपम शूरवीर, पराक्रमी, दृढ़ प्रतिज्ञा, धर्म रक्षक स्पृहणीय स्वतंत्रता प्रेमी के रूप में दर्शाया है. सम्पूर्ण काव्य में वीर रस की अजस्त्र मंदाकिनी प्रवाहित होती है. युद्ध के वर्णन अत्यन्त सशक्त और शब्दचित्र सा खड़ा कर देने वाले है.

जौहर

" जौहर " भी वीर रस प्रधान महाकाव्य है जो चित्तौड़ नरेश रत्नसिंह और महारानी पद्मिनी की गौरव गाथा है, साथ ही खिलजी की कुटिलता का वर्णन भी कवि ने बड़े ही कौशल से किया है. रत्नसिंह के आत्मबलिदान, वीरता, पद्मिनी की सुन्दरता, वीरत्व एवं सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर व्रत, गोरा बादल की वीरता का चित्रण किया है. कवि ने वीर दर्पपूर्ण व्यक्तित्व के जीते जागते चित्र अंकित किए हैं. गोरा बादल के युद्ध का सजीव चित्र कवि ने खींचा है. किस प्रकार वह फुंफकारता दुश्मन पर चढ़ जाता है, प्रलय के मेघ के ~~सम~~ समान गरजता हुआ शत्रु सेना को गाजर मूली की तरह काटता जाता है. रत्नसिंह का युद्ध कौशल, पकड़े जाने पर रानी का सैनिकों को उत्साहित करना बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है.

तुमुल

" त्रेता के दो वीर " के रूप में प्रकाश में आयी रचना को कवि ने " तुमुल " नाम से प्रकाशित किया है. इसमें पौराणिक कथानक से प्रेरणा लेकर लक्ष्मण, मेघनाद के युद्ध का बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन किया है. इसमें लक्ष्मण-मेघनाद का घमासान युद्ध, लक्ष्मण की मूर्च्छा राम का विलाप, हनुमान का संजीवनी लाना, विभीषण के कहने पर यज्ञ करते हुए मेघनाद का लक्ष्मण द्वारा वध दर्शाया है. सम्पूर्ण कृति वीर रस से ओतप्रोत है.

जय हनुमान

श्यामनारायण पाण्डेय कृत यह खण्ड काव्य वीर रस की महत्वपूर्ण कृति हैं. इसके कथा को पौराणिक कथानक से ग्रहण कर कवि ने हनुमान के वीरत्व, स्वाभिमान, साहस, निडरता, यश, पराक्रम का ही वर्णन

किया है. सम्पूर्ण खण्ड काव्य में वीर दर्पपूर्ण उक्तियाँ जगह-जगह दृष्टिगोचर हो जाती है ।

गोरा बध :-

गोरा बध ऐतिहासिक खण्डकाव्य है इसकी कथा कवि ने इतिहास से ग्रहण कर अपनी कल्पना से इसे संवारा है. इसमें गोरा बादल की वीरता तथा उनका ओज एवं उनकी दर्पपूर्ण उक्तियाँ ही दृष्टिगोचर होती हैं. यह रचना वीर रस की महत्वपूर्ण कड़ी है. गोरा बादल में कवि ने गोरा की वीरता के वर्णन बड़ी कुशलता से किया है. खिलजी के खेमें में पालकियाँ लेकर जाना, रत्नसेन को खिलजी की कैद से मुक्त कर मुगल सेना के साथ युद्ध करना और अन्त में वीर गति को प्राप्त होना दर्शाया है. कवि की ये सारी ही कृतियाँ वीर रस की परम्परा को आगे बढ़ाने वाली अमूल्य निधियाँ हैं.

इस प्रकार हम देखते है कि श्री पाण्डेय जी ने दो महाकाव्य तथा तीन खण्डकाव्य हमारे आलोच्य युग को दिये हैं. चिरकाल से चर्चित उनका शिवाजी महाकाव्य उनकी दीर्घकालीन साधना का सुपरिणाम है जो कि हमारे आलोच्य युग के बाद की रचना है.

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि श्याम नारायण पाण्डेय जी मुख्यत: वीर रस के कवि हैं वीरता इनकी रगों में भरी हुई है. पौराणिक, ऐतिहासिक कथानकों को लेकर ही इन्होंने काव्य रचना की है. विवेच्य काल में आने वाले दो महाकाव्य एवं तीन खण्डकाव्य है जिनमें मुख्यत: युद्धवीर ही प्रधान हैं. इन काव्यों के विश्लेषण के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि जय हनुमान और तुमुल को छोड़कर शेष वीर काव्य राष्ट्रीय चेतना से भी प्रेरित है जिसे परवर्ती अध्याय में प्रसंगोनुसार दृष्टिगोचर किया जायेगा.

मलखान सिंह " सिसौदिया "

राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित वीर रस की अजस्त्रधारा को प्रवाहित करने वाले मलखान सिंह सिसौदिया का जन्म 7 जनवरी सन् 1923 ई० में हुआ. आपके नाम एवं काम दोनोंसेही राजपूती शौर्य झलकता है. कवि का उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से बचपन से ही उनका आत्मीय सम्बन्ध रहा है. उनकी प्रारंभिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण का श्रेय उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद को है. किन्तु राष्ट्रीयता की क्रान्तिकारी भावना का विकास एवं कवि जीवन का आरंभ इटावा की जनपद की उर्वरा भूमि से हुआ जहाँ इन्होंने इण्टमीडिएट की शिक्षा प्राप्त की. छात्र जीवन में ही विभिन्न काव्य प्रतियोगिताओं में अनेक पदक एवं पुरस्कार प्राप्त किए. यहीं पर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध छात्र आन्दोलनों में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई.

कवि पर प्रगतिशील विचारों का प्रभाव आगरा के छात्र जीवन में पड़ा , वहीं साइमन कमीशन की घटना को लेकर उन्होंने " जेलयात्री " नामक खण्डकाव्य लिखा जो प्रकाशन से पूर्व ही एक मित्र की असावधानी से खो गया. उसमें एक विक्षिप्त नारी का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण था, जिसकी इलाहाबाद के प्रकाशकों ने भूरी- भूरी प्रशंसा की थी. [21]
सन् 42 में भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रजी सरकार द्वारा जारी वारंट के कारण छात्र नेता के रूप में बुंदेलखण्ड में अंतर्धान हो जाना पड़ा जहाँ ये भयानक बीमारी के शिकार हुए जो तीस वर्ष तक चली जिसके फलस्वरूप सुंदर स्वस्थ खराब हो गया. किन्तु भयानक बीमारी और आर्थिक संकट से जूझते हुए भी उन्होंने अपनी काव्य साधना जारी रखी. निराशा को उनके जीवन में कभी स्थान नहीं मिला. उन्होंने स्वयं लिखा है - " डटकर लड़ने की शिक्षा ही मिली दूध के माता के ." [22]

सन् 43 से 47 तक के आगरा जनपद में स्थित टूंडला प्रवास में उनकी क्रान्तिकारी कविता प्रकाशित करने के कारण सन् 45 में आगरा के दैनिक संदेश का प्रकाशन अंग्रेजी सरकार द्वारा बंद कर दिया गया और प्रेस पर ताला डाल दिया गया. सन् 46 में उनका पहला संग्रह " बंगाल के प्रति और अन्य कविताओं नाम से प्रकाशित होकर बहुचर्चित हुआ जो आज अप्राप्य है. इसके साथ ही वह प्रगतिशील हिन्दी कविता की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गये. " हंस " और " नया साहित्य " मासिक पत्र में उनकी कविताओं और कहानियों का प्रकाशन सन् 44 से ही होने लगा ।

शारीरिक अस्वस्थता के कारण इन्हें सन् 48 से 66 तक कवि जीवन से हट जाना पड़ा किन्तु सन् 1965 के भारत पाक युद्ध के संदर्भ में रचित अपनी " सूली और शान्ति " नामक प्रबन्ध काव्य के प्रकाशन के साथ वह एक नयी आशा से मंडित होकर प्रकट हुए. उन्हें एक पग आगे बढ़कर और ख्याति मिली. इसके वैशिष्टय की चर्चा साहित्य जगत में खूब हुई. उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वह बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.

डॉ० सिसौदिया के काव्य के विषय में राष्ट्रीय और प्रगतिशील काव्य धारा के संदर्भ में अनेक शोध प्रबन्धों और समीक्षा ग्रंथों में समालोचना की गई है. उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उनकी साहित्य सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें " साहित्य वारिधि " की उपाधि से अलंकृत किया. साहित्य, कला, संस्कृति परिषद मथुरा ने " साहित्य मार्तण्ड " और तुलसी शोध पीठ कासगंज ने " विद्या वारिधि " की मानद उपाधियों से उन्हें सम्मानित किया.

डॉ० सिसौदिया गत 27 वर्षों से एटा में एक इण्टर कालेज के प्राचार्य है जिसे उन्होंने एक छोटे से विद्यालय से विशाल संस्था का रूप

दिया है. अनेक शिक्षण संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों में शिक्षा सलाहकार के रूप में मनोनीत किए गये हैं. अनेक सामाजिक व शैक्षणिक कार्य कलापों में ये सक्रिय योगदान करते रहे हैं. हर स्थान पर उनकी भूमिका रचनात्मक और समन्वयात्मक रहती है. और वह हर प्रकार की संकीर्णता से अलग रहते हैं. वे एक शालीन, शिष्ट, सरल, निर्भय, अभिमान रहित व्यक्ति हैं. उनका व्यक्तित्व अत्याधिक मोहक है. कवि ने स्वयं स्वीकार किया है.. " मेरा जीवन उतार चढ़ाव और संघर्ष पूर्ण रहा है. मेरे साहित्यिक विकास की आयन रेखा रुक- रुक कर उठती- गिरती आगे बढ़ी है. नियति और परिस्थितियों को चुनौती देते हुए मैंने अहम निर्माण के साथ साहित्य साधना की है. ऐसा करते हुए मैंने न कलम को बेचा है और न इमान को, मेरा समस्त काव्य सृजन उदात्त मानवीय मूल्यों के आग्रह से ओतप्रोत है. मेरे रचनाओं में देशप्रेम, मानवतावाद और प्रकृति प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित है " .... आज भी मैं साहित्य सेवा में लगा रहता हूँ अन्य दायित्वों के निर्वाह के साथ-साथ साहित्य सेवा ही मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य है. किन्तु नियति ने अपना क्रूरतम प्रहार मेरी आंखों में मोतिया बिन्दु के रूप में किया है. इससे साहित्य सेवा में बहुत बाधा उपस्थित हो गयी है. लेकिन मैं निराश नहीं हूँ । "

शुभ्र, सरल, स्नेहिल और विनयी व्यक्तित्व से हिन्दी संसार को बहुत सी आशाएँ है. विश्वास है कि उनकी सशक्त लेखनी हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में निरन्तर रत रहेगी. आजतक इनकी प्रकाशित काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं ...

" बंगाल के प्रति और अन्य कवितायें "।1946 ।, सूली और शान्ति " ।1968।, " दीवारों के पार " ।1974। " आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक एवं नायिका की परिकल्पना ।शोध प्रबन्ध ।

अप्रकाशित पुस्तकें :-- संपाति चिन्ता ‌‌‌‌‌‌‌‌(खण्डकाव्य), पुनरारम्भ (कहानी संग्रह), देवता का दर्द (कविता संकलन), गहरे पानी पैठ (निबंध संग्रह), समय के चरण (कविता संग्रह), चिन्तन के क्षण (विचार संग्रह),

हमारे विवेच्य काल में " बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ " एवं " सूली और शान्ति " नामक खण्ड काव्य आता है, यह रचना यद्यपि 1968 में प्रकाशित हुई परन्तु यह 1965 के युद्ध से सम्बन्धित है और साथ ही इनकी रचना उन्हीं दिनों हुई इसलिए हम इसे अपने विवेचन का विषय बना रहे हैं, यहाँ कवि की दोनों ही वीर रस की रचनाओं पर विचार किया जा रहा है,

बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ --

यह कवितायें 1942 के विश्वयुद्ध के दौरान लिखी गयी है, जब कवि अस्वस्थ थे, इन कविताओं के प्रकाशन से ही ये प्रगतिशील कवियों की अग्र पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गये, देश प्रेम की भावना ही इन कविताओं का केन्द्र बिन्दु है, साहस एवं उत्साह की भावना भी पर्याप्त इनमें मिलती है, " देश- देश ने करवट बदली ", " मेरी अभिलाषा " आदि कवितायें वीर रस से परिपूर्ण हैं,

सूलि और शान्ति -

यह मलखान सिंह सिसौदिया का प्रसिद्ध खण्डकाव्य है जो 1965 के भारत पाक युद्ध से प्रेरणा लेकर लिखा गया है, कवि ने युद्ध की समस्त घटनाओं, वीरों के अद्भुत शौर्य, जनमानस का युद्ध के प्रति उत्साह, काश्मीर की सुन्दरता का वर्णन बड़ी ही प्रभावपूर्ण शैली में किया है, इस युद्ध के दौरान हुई राष्ट्रीय एकता का वर्णन भी बड़ी सजीवता से कवि ने किया है, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मावलम्बियों ने इसमें भाग लेकर प्राणार्पण किये, इसमें वीर रस की अजस्त्र धारा प्रवाहित हुई है, वास्तव में यह वीर रस की काव्य कृतियों के निर्माण का एक

क्रान्तिकारी प्रयास है जो सराहनीय है ।

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह

कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह का जन्म सन् 1910 में सीतापुर जिले के पैसिया ग्राम में हुआ. बी० ए० की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय एवं एम० ए० नागपुर विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की. लखनऊ विश्वविद्यालय से सर जार्ज लौबर्ट गोल्ड मेडल प्राप्त किया. सिधौली (सीताराम पुर) के श्री विक्रमादित्य क्षत्रिय विश्वविद्यालय के संस्थापक, आजीवन सदस्य और मंत्री एवं हिन्दी सभा सीतापुर के भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद बड़ौदा के सभापति एवं हिन्दी विभाग बड़ौदा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रहे हैं. आजकल आप सेवा निवृत हैं. आपकी काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं...

" मेघमाला ", " शम्पा " (1960), " बा और बापू एवं विनय.

नाटक- जनकवि-जगनिक (1957), कवि कुल गुरु (1956), कविवर नरोतम दास (1957), महाकवि निराला तथा तुलसीदास (1960).

आलोचना - भारतेन्दु, हिन्दी नाट्य साहित्य और रंग मंच की मीमांसा दो भाग.

संपादित ग्रंथ- शिवकवि, दौलती बाग विलास, आचार्य कृष्ण बिहारी मिश्र - स्मृति ग्रंथ, कविश्वर दलपतराम का श्रवणाख्यान, अक्षयरस (अखा का बृहत काव्य संग्रह) तथा गोविन्द हुलास नाटक (हिन्दी का प्रथम पद्य नाटक), गोप कविकृत काव्य प्रभाकर किंवा रामिणीहरण.

शम्पा

" शम्पा " की कवितायें सांस्कृतिक राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित कवितायें वीर रस युक्त राष्ट्रीय काव्य की दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण है. अतीत की गौरव गाथा का स्मरण कराके क्षात्र धर्म के प्रति माध्यम से कवि ने सुप्त चेतना को जगाने का प्रयत्न किया है.

" पाटली पुत्र ", " डाँडियाखेरा " , " हल्दी घाटी ", " अयोध्या " आदि में कवि ने भारतीयों में उत्साह जगाया है. इसके अतिरिक्त देश की महान विभूतियों को भी कवि ने श्रद्धांजलियाँ अर्पित करता हुआ " वेणी माधव ", " बन्दा वैरागी " जैसे वीरों के माध्यम से कर्मशीलता की प्रेरणा देता दृष्टिगोचर होता है. " वीर बाहु " भी वीर रस की अद्वितीय रचना है. कवि की चेतना इन कविताओं में राष्ट्रीय रही है. अतीत के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को सुलझाने का सफल प्रयास है.

प्रतिपदा :-

समय-समय पर लिखी हुई विभिन्न कविताओं का संग्रह है. इसमें सांस्कृतिक मानदण्डों, नवीन तत्त्वों के प्रति बढ़ते हुए रागात्मक सामंजस्य का निरूपण, प्रेम और सौन्दर्य के गीत हैं. " त्रिपथगा ", " हिमालय ", " महाशक्ति " , " महान प्रतिशोध ", " ईद का चाँद ", " हेमू-अंतिम विक्रमादित्य " वीर रस के उत्कृष्ट नमूने हैं. इसके साथ ही कवि ने वर्ग संघर्ष द्वारा उत्पन्न समस्याओं का वर्णन तीन चित्र, शक्कर मिल, अगहन गया, पूस का दिन एवं किसानों की दीनता में वर्णन किया है. इस संग्रह में भी कवि की चेतना राष्ट्रीय रही है ।

द्वारिका प्रसाद मिश्र

द्वारिका प्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1901 ई० में हुआ था. साहित्य रचना तथा पत्रकारिता के क्षेत्रों के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र में भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया है. साहित्य क्षेत्र में आपकी ख्याति का मुख्य कारण आपके द्वारा रचित " कृष्णायन " है. इसका रचना काल सन् 1943 ई० है. " कृष्णायन " महाकाव्य पर यहाँ विवेचन किया जा रहा है.

कृष्णायन –

" कृष्णायन " कृष्ण काव्य की जीवन परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है. कवि ने कृष्ण जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की कथा वर्णित की है.

यह ब्रजभाषा की रचना है परन्तु इसमें वीर रस की धारा अत्यधिक वेग से प्रवाहित हुई है. पूतना, शकटासुर, बकासुर, कंस आदि के वध में कृष्ण की वीरता दृष्टिगोचर होती है. कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध के समय भी वीर रस दृष्टिगोचर होता है. इसके अन्तिम चार काण्डों में युधिष्ठिर, अर्जुन, भीष्म, कर्ण, दुर्योधन जैसे वीर पात्रों को स्थान देकर वीरत्व की कोटि में श्रीवृद्धि की है. इस काव्य ने वीर काव्यों की कोटि में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है ।

मोहनलाल महतो " वियोगी "

इनका जन्म बिहार राज्य के गया जिले में उपरिडीह नामक स्थान पर सन् 1899 ई० में हुआ. हिन्दी, संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी का इन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया. इनकी लगभग 45 से ऊपर रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं. अछूत ‖1925 ई०‖, निर्माल्य ‖1926 ई०‖, एकतारा, रेखा, धुंधले चित्र ‖1930 ई० ‖, कल्पना ‖1936 ई० ‖, आरती के दीप ‖1940 ई०‖, कला का विवेचन ‖ सम्पादन 1936 ई०‖, आर्यावर्त ‖1943 ई०‖,

इन प्रकाशित काव्य रचनाओं में से हमारे विवेचन परिधि में इनका महाकाव्य " आर्यावर्त " ही आयेगा. इसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत है.

सर्वप्रथम हिन्दी में अमिताक्षर छन्द में लिखा यह मौलिक महाकाव्य है. इसमें कवि ने इतिहास प्रसिद्ध ग्रंथ पृथ्वीराज रासो को अपने कथानक की आधार शिला बनाई है. परन्तु कथानक ग्रहण करने के अतिरिक्त भी " आर्यावर्त " के कवि ने इतिहास के सन् - तारीखों के स्थान पर ऐतिहासिक अवबोध को राष्ट्रीय चेतना के साथ प्रस्तुत किया है. जहाँ कवि ने पृथ्वीराज चौहान एवं गोरी के युद्ध का हृदयग्राही वर्णन किया है, वहाँ जयचंद के अन्तर्द्वन्द्व को रूपाकार देने में कल्पना शक्ति से काम लिया है. पृथ्वीराज एवं गोरी का युद्ध दो राजाओं का युद्ध है. देश पृथ्वीराज का साथ न देकर

दूर खड़ा रहकर तमाशा देखता रहा. पृथ्वीराज की हार को कोई भी अपनी हार नहीं मानता. किन्तु " आर्यावर्त " के कवि ने महारानी संयोगिता के द्वारा एक महान कार्य का सम्पादन कराया है. रानी ने अपनी दूरदर्शिता के बल पर पति की हार का बदला लेने के लिए देश को पुकारा और गोरी को भागने के लिए विवश कर दिया.

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जहाँ कवि ने छायावादी एवं रहस्यवादी काव्य के उत्थान में योग दिया, दलितों के प्रति सहानुभूति (अछूत काव्य संग्रह) प्रकट की वहीं देश के प्रति गौरव के भाव भी उनके अनुभूति कोष की समुज्ज्वल रत्न हैं. गोरी के चरित्र में साम्प्रदायिकता लेश मात्र नहीं है. सारा आर्यावर्त क्षुद्र जातिवाद और संकीर्ण साम्प्रदायिकता से परे शुद्ध राष्ट्रीयता का उदाहरण है. कवि ने अनार्यों के प्रति द्वेष एवं घृणा के भाव व्यक्त नहीं किए. मानव एवं बाह्य दोनों ही प्रकृतियों के चित्रण में " वियोगी " जी सफल रहे हैं . इससे हम कह सकते हैं कि " वियोगी " जी वीरता एवं राष्ट्रीय भाव धारा के कवि हैं.

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सन् 1936 से लेकर 1945 तक चले इस युग के अनेक कवियों ने युगगत जनवादी प्रवृत्ति के अतिरिक्त वीर रस की रचनायें हिन्दी साहित्य को दी जो अमूल्य हैं. इन नौ वर्षों के अल्प समय में वर्गगत सामाजिक वैषम्य के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण से प्रेरणा प्राप्त कर " विक्रमादित्य ", " जयभारत ", " जौहर ", " हल्दीघाटी ", " कृष्णायन " एवं " आर्यावर्त " जैसे सशक्त महाकाव्य प्रदान किये. ये महाकाव्य मुख्यतः इतिहास को आधार बनाकर लिखे गये हैं. पौराणिक कथानक को आधार बनाकर प्रस्तुत " कृष्णायन " एवं " जयभारत " जैसी रचनायें समकालीन राष्ट्रीय जागरण से अनुप्राणित हैं. छायावादी युग के महाकाव्यों से इनकी संख्या कहीं अधिक है. " अपरा ", " हिमकिरीटिनी ", " कुंकुम ", " भैरवी ", " वासवदत्ता ", " पूजागीत ", " हुंकार ", " बंगाल के प्रति " और अन्य कविताओं का सृजन कर

हिन्दी साहित्य में वीर रस की धारा को प्रवाहमान रखा. इस युग के कवियों की मूल चेतना राष्ट्रीय रही है जैसाकि पूर्ववर्ती विवेचन से स्पष्ट है. इस युग में लिखी गयी रचनाएँ पूर्ववर्ती छायावादी युग से संख्या में अधिक हैं जिसमें देशप्रेम, बलिदान की भावना का स्वर दृष्टिगोचर होता है. यदि तुलनात्मक दृष्टिकोण से विचार किया जाये तो यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि सन् 1931 के आसपास सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रान्तिकारियों के बलिदानों ने युगीन चेतना को प्रभावित किया जिसके साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों सुभाषचन्द्र बोस का प्रवेश भी बलिदान एवं वीरत्व के लिए प्रेरक रहा होगा. सन् 1942 की क्रांति भी इसी काल खण्ड में आती है. अतः हम कह सकते हैं कि प्रगतिवादी और क्रान्तिकारी चेतना की सम्मिलित भूमियों ने ऐसे काव्यों की रचना का मार्ग प्रशस्त किया है और इतना ही नहीं अपितु उसने पूरवर्ती वीर काव्यों के सर्जन में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्माण किया है जो कि परवर्ती पृष्ठों के विवेचन से प्रकट है.

प्रयोगवादी युग के कवि और काव्य

प्रयोगवादी कविता का मूल तत्व स्वभावतः ही काव्य विषयक प्रयोग अथवा अन्वेषण है. इसमें भी दो प्रकार के वर्ग उत्पन्न हो गये. एक तो सचेत होकर निश्चित सामाजिक राजनीतिक प्रयोजन में साम्यवाद के जीवन दर्शन को अपना कर्तव्य मानकर रचना करने तथा दूसरा वर्ग किसी राजनीतिक वाद के बंधन में नहीं पड़ा अपितु उसने काव्य को नवीन प्रयोगों द्वारा सवारने का भार उठाया. प्रयोगवादी युग की इस चेतना के साथ-साथ भी इस युग में राष्ट्रीय आंदोलन तथा क्रान्तिकारियों के प्रयत्न भी स्वतंत्रता तक होते हैं और दोनों महायुद्ध भी. इस युग की चेतना को एक ओर मार्क्स - वादी तथा दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं विदेशी आक्रमणों से जुड़ा पाते है. अतः इस पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत काव्य खण्ड में आये हुए प्रतिनिधि कवि

श्री कृष्ण सरल, आनन्द कुमार, विश्वनाथ पाठक, जीवन शुक्ल, श्याम नारायण प्रसाद, हरदयाल सिंह, लक्ष्मीनारायण मिश्र, केदारनाथ सिंह प्रभात, जगन्नाथ प्रसाद " मिलिंद " एवं लक्ष्मी नारायण कुशवाहा हैं. इनकी रचनाओं और इन कवियों का अनुशीलन यहाँ अभीष्ट है.

श्री कृष्ण सरल

क्रान्तिकारियों के जीवन पर कलम चलाने वाले राष्ट्रीय विचारधारा के सशक्त गायक श्री कृष्ण सरल का जन्म सन् 1921 ई० में मध्य प्रदेश के गुना जिले में स्थित, बीना कोटा मार्ग पर स्थित अशोकनगर में हुआ है. बचपन से ही कृष्ण सरल जी अत्याधिक साहसी रहे. प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश पाते ही आसपास के वातावरण से क्रांतिकारियों के प्रति जिज्ञासा और प्रशंसा जुटा ली थी. उनके बचपन की निम्न घटना इनके अभूतपूर्व साहस का परिचायक है.

" भगतसिंह दिल्ली के असेम्बली हाल में बम का धड़ाका करके गिरफ्तार हो चुके थे और उनके साथी राजगुरु को महाराष्ट्र में गिरफ्तार करके लाहौर ले जाया जा रहा था. सरकार ने भीड़ से बचने के लिए क्रांतिकारियों को बीनाकोटा मार्ग से दिल्ली पहुँचाने की योजना बनाई. जब इन क्रान्तिकारियों की बीनाकोटा स्टेशन पर पहुंचने की खबर नगर की जनता तक पहुँची तो स्टेशन पर दर्शनार्थियों की भीड़ लग गई. पुलिस का भारी प्रबंध था. इसी समय कृष्ण सरल जी ने अपने साहस का परिचय दिया. चुनौती स्वीकार कर एक गोरे पुलिस अधिकारी को पत्थर का निशाना बनाकर मारा जो उसकी कनपटी पर लगा. स्टेशन के पोर्टरों ने घेरा डाल कर कवि को पकड़ लिया और वह मार मारी जिसका हिसाब भी नहीं. चाँटों और घूसों की वर्षा के साथ बूटों की ठोकरें भी लगाई गई. इस घटना से कवि के मन में अंग्रेजों के प्रति

विद्वेष और क्रान्तिकारियों के प्रति श्रद्धा की भावना घर कर गयी.

सन् 1940 में सरल जी गुना के राजकीय विद्यालय से हाईस्कूल कर रहे थे. ये छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय विषयों पर कविताएँ लिखते थे. यह युग भी आजादी के संघर्ष और दमन का युग था. सरल जी के शब्दों में ...

" मुझे याद है कि नगर के पुलिस अधीक्षक महोदय कवि सम्मेलन के स्थल पर उपस्थित थे और उन्होंने चुनौती दी थी कि यदि किसी ने आपत्तिजनक कविता पढ़ी तो वे उसे हथकड़ियाँ डालकर ले जायेंगे. कवियों में से कुछ लोग कन्नी काट गए और कुछ लोग भूल जाने का बहाना बनाकर दो चार पंक्तियाँ सुना कर बैठ गये. मेरे श्रद्धेय गुरु स्व0 श्री भानुप्रकाश सिंह जी ने मेरी ओर देखा. मैंने संकेत से उन्हें आश्वस्त किया और उन्होंने मेरा नाम पुकार दिया. मैं उठा और पूरे जोश खरोश के साथ एक ओजस्वी रचना को पढ़ डाली जिसमें अंग्रेजों के प्रति स्पष्ट रूप से प्रति हिंसा की भावना व्यक्त की गई थी. पंक्ति पंक्ति पर मुझे दाद मिली और लोगों ने मुझे हाथों पर उठा लिया. जब उत्तेजना का यह माहौल देखा तो पुलिस अधीक्षक महोदय ने मुझे गिरफ्तार करना नहीं समझा[illegible]. वे नकली घुड़की देकर चले गये. " [23]

सन् 1942 के भारत [illegible] छोड़ो आन्दोलन में सरल जी ने जेल यात्रा की. इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सरल जी ने गुना के राजकीय विद्यालय में ही अध्यापक पद संभाला. अब इनका संबंध गोपनीय कार्यों से होने लगा. भूमिगत क्रान्तिकारियों को इनके घर ठहराया जाता या उनके प्रबन्ध का उत्तरदायित्व इनके कंधों पर डाला जाता. देश की आजादी के उपरान्त सन् 1948 में महात्मा गांधी शहीद हो चुके थे . साहित्यिक मित्रों की प्रेरणा से कवि, गांधीजी पर लिखी गई अखिल भारतीय कवियों की कविताओं का सम्पादन करके " बापू स्मृति ग्रंथ " को प्रकाश में लाया. इस कृति के कारण कवि को काफी नुकसान

उठाना पड़ा. क्रांतिकारियों पर प्रबन्ध काव्य सरल जी ने फुटकर कविताओं के स्थान पर लिखने के लिए निश्चय किया. चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया. कवि कर्तव्य के नाते कवि ने देश वासियों के हाथों एक ऐसा वीर काव्य देना चाहा जो उन्हें त्याग, वीरता और बलिदान के स्थायी संस्कार डाल सके. कृष्ण जी ने सचमुच देश वासियों को " सरदार भगतसिंह " महाकाव्य दे डाला. कवि ने भगत की मां को दिया हुआ वचन पूरा करने के लिए पत्नी के जेवर, फर्नीचर, बर्तन, पुस्तकें यहाँ तक बच्चों के गर्म कपड़े बेच दिये और ग्रंथ की छपाई में सारा पैसा लगा दिया. भगतसिंह की माँ को भेंट स्वीकार करने के लिए उज्जैन बुलाया गया. विशाल जन समूह की उपस्थिति में शहीद की मां को पुस्तक भेंट दी गई. जो कुछ सहा था, उससे कहीं अधिक सरल जी को मिला जब माँ ने कहा-

" इस ग्रन्थ को हाथों में लेकर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा बेटा भगत मेरी बाहों में आ गया हो. मैंने उसे लाहौर में खोया था पर उज्जैन में पा लिया है । " 24

उसके बाद भगतसिंह की माँ ने कवि को आजाद पर लिखने के लिए कहा.. " तुमने मेरे बेटे भगतसिंह पर तो इतना बड़ा ग्रंथ लिख दिया ऐसा ग्रंथ पहले तुम्हें चन्द्रशेखर आजाद पर लिखना चाहिए था. आज आजाद की माँ नहीं है, पर उसकी माँ की हैसियत से तुम्हें आदेश दे रही हूँ कि कुछ जब तुम दूसरा ग्रंथ चन्द्रशेखर आजाद पर लिखो. वचन दो कि क्या तुम ऐसा कर सकोगे ? " 25 भगतसिंह की माँ की महानता के सभी कायल हो गये और सरल जी ने तो भावावेश में आकर अपना अंगूठा चीर कर माँ के मस्तष्क पर रक्त तिलक लगाकर उनकी इच्छापूर्ति का वचन दिया और शीघ्र ही चन्द्रशेखर आजाद महाकाव्य की रचना की. नेता जी पर कवि ने नेताजी की अन्तप्रेरणा से झकझोर दिये जाने पर लिखा. उन्हें ऐसा लग रहा था मानो नेताजी पुकार कर कह रहे हो ...

" क्रांतिकारियों पर लिखने वाले की कलम क्यों रुक गई ? हमारे कदम तो कभी रुके नहीं थे, तुम्हारी कलम क्यों रुक गयी ? वतन के इश्क की इब्तिदा में ही रोने लगे, फिर आगे क्या होगा ? जब तुमने हम लोगों पर ही लिखने का बीड़ा उठाया है तो फिर निराश होने से कैसे काम चलेगा ? होसला रखो । जो बीते सहो लिखो । "[26]

उसके उपरान्त कवि ने बड़ी कठिनाई से सुभाष चन्द्र बोस पर लिखा, इस प्रकार कवि ने अपने ही प्रयत्नों से आत्म निर्भर होकर आप एक कर्तव्यशील अध्यापक के रूप में कार्य किया ,अब आपने अवकाश ग्रहण कर लिया है, भगतसिंह के प्रकाशक का वक्तव्य " छात्र जीवन से ही देश -भक्ति की तड़प के लिए क्रान्ति के साधक इस कवि ने दमन चक्र की चुनौतियों को स्वीकारते हुए अन्यायों के विरुद्ध अपने उन्मुक्त स्वरों को मुखरित किया."[27] कवि का हृदय राष्ट्रीयता और क्रान्ति की भावनाओं से ओतप्रोत है, साथ ही उनके व्यक्तित्व में निर्भीकता, त्याग, अध्यवसाय, काव्य प्रेम, साहस, पुरुषार्थ आदि गुण विद्यमान है जिन्हें हम ऊपर लिखित वर्णित घटनाओं से जान सकते हैं. यदि आपको साहित्य क्षेत्र का निर्भीक नर-नाहर कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी. भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष, अहिल्याबाई आदि देश भक्त परवानों के जीवन पर प्रबंधात्मक कविता लिखकर आपने देश व्यापी ख्याति प्राप्त की है. अपने स्वाभिमान को इन्होंने हमेशा बचाकर रखा चाहे इसके लिए उन्हें कलेवर ही क्यों न बेचाना पड़ा, अच्छे कामों के लिए उन्हें कई अभिनन्दन पत्र भी मिले है. कवि बालकवि बैरागी उनके लेखन को आजतक बल प्रदान करते रहे हैं. एक स्पष्टवादी, सरल हृदय सरल जी से ये आशा की जा सकती है कि वे देश को इसी प्रकार क्रान्तिकारियों के जीवन संबंधी ग्रंथों की भेंट देते रहेंगे. अब तक इनकी प्रकाशित काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं....

" सरदार भगतसिंह " ﴾सन् 1964 ﴿, " अजेय सेनानी चन्द्रशेखर आजाद " ﴾ सन् 1966 ﴿, " सुभाषचन्द्र " ﴾ सन् 1977 ﴿.

इसके अतिरिक्त भी...

" महारानी अहिल्या बाई ", " मुक्तिगान ", " स्मृतिपूजा ", " कवि और सैनिक ", " बच्चों की फुलवारी ", " मुझको धरती प्यारी है ", " भारत का खून उबलता है ", " रक्त गंगा ", " किरण कुसुम " " स्नेह सौरभ ", " राष्ट्र भारती " " अद्भुत कवि सम्मेलन " हेडमास्टर का पाजामा ﴾ हास्य व्यंग्य ﴿.

वीर रस पूर्ण कृति सरदार भगतसिंह ही हमारे विवेचन का विषय है जिसपर हम विचार कर रहे हैं.

सरदार भगतसिंह
====

" सरदार भगतसिंह " वीर काव्यों की कड़ी का एक अग्रिम कदम है. इसमें भगतसिंह के शौर्य, दर्प को उद्घाटित करते हुए क्रांतिकारियों के स्वतंत्रता संग्राम में किये गये प्रयासों का बड़ा ही सजीव वर्णन उपस्थित किया है. इसमें कवि ने शेर भगत के माध्यम से देश प्रेम, ओजस्विता, भावोत्तेजना, उत्साह एवं राष्ट्र प्रेम आदि को चित्रित किया है । वास्तव में इस कृति को राष्ट्रीय वीर काव्य की कोटि में रखा जा सकता है ।

कृति अंगराज :-

आनन्दकुमार कृत " अंगराज " संस्कृत गर्भित खड़ी बोली का महाकाव्य है जिसका नायक महाभारत का सुप्रसिद्ध वीर कर्ण हैं. इसमें नायक कर्ण की कथा के साथ-साथ महाभारत की प्रायः सम्पूर्ण कथा आ गई है. इसमें वीर रस का प्राधान्य है, रोचक मनोहर प्राणवान दृश्यों की सुन्दर योजना है. कवि ने कर्ण के शौर्य, दानशीलता, मैत्री, गुरु

भक्ति का वर्णन बड़े ही ओजपूर्ण शब्दों में किया है. यह वीर काव्यों की परम्परा में अपना विशिष्ठ स्थान रखता है. इसमें वीर दर्प पूर्ण उक्तियों की भरमार है ।

विश्वनाथ पाठक एवं श्याम नारायण प्रसाद कृत रणचण्डी एवं झांसी की रानी

विश्वनाथ पाठक द्वारा रचित " रणचण्डी " खण्डकाव्य वीर रस की अद्वितीय कड़ी है. इसमें कवि ने " दुर्गा सप्तशती " के उत्तम चरित्र का आधार ग्रहण किया है. इसमें दुर्गा की वीरता और शुम्भ निशुम्भ के युद्ध का वर्णन है. कथानक पौराणिक है और यह कृति अतीत के प्रति गौरव गान की प्रेरणा से सम्बद्ध है.

झांसी की रानी §1955§

श्याम नारायण प्रसाद कृत " झांसी की रानी " वीर काव्यों की कोटि में रखी जा सकती है. कवि ने इतिहास से कथानक लेकर रानी के अनन्त शौर्य, पराक्रम का वर्णन किया है. बाल्यकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त रानी वीरता के जीवन्त आदर्शों पर ही चलती रही. देश प्रेम का ज्वलन्त प्रमाण यह महाकाव्य उपस्थित करता है. कवि ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जातीय स्वाभिमान, राष्ट्रीय गौरव मातृभूमि के हितरक्षण में अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने के उच्च आदर्शों को स्थापित करने वाली रानी की जीवन गाथा गायी है. इसी काव्य में वह एक वीर, साहसी, दूरदर्शी सेनापति के रूप में भी दृष्टिगोचर होती है ।

जीवन शुक्ल

कृति सिंहद्वार :- बापा रावल और महमूद गजनवी के युद्ध को कथावस्तु के रूप में लेकर कवि जीवन शुक्ल ने यह वीर रस युक्त खण्डकाव्य

की रचना की है. उसमें कवि ने सौराष्ट्र के आपा रावल, घोघागढ़ निवासी स्वतंत्र सरदार के शौर्य, दर्प, अपने धर्म और संस्कृति पर मर मिटने का वर्णन किया है. वीर रस की अजस्त्र मंदाकिनी सम्पूर्ण काव्य में प्रवाहित हुई है. नवीन उभरते कवि का वीर काव्यों की कोटि में यह प्रयास प्रशंसनीय है.

हरदयालु सिंह

हरदयालु सिंह का जन्म महमूदाबाद जिला सीतापुर ॥उ0 प्र0॥ में सन् 1893 में हुआ था. इनके पिता का नाम मातादीन एवं माता का नाम महादेवी था. सन् 1912 में महमूदाबाद से हाईस्कूल पास करने के उपरान्त कानपुर में दो वर्ष इण्टरमीडिएट की शिक्षा ग्रहण की. कानपुर, मफुर , इण्डियन प्रेस प्रयाग, सेण्ट्रल ट्रेनिंग स्कूल झांसी और गोरखपुर में नौकरी करने के पश्चात् 1948 में महमूदाबाद लौट आये.

मौलिक काव्य कृतियाँ ....

दैत्य वंश ॥ 1940॥, रावण महाकाव्य ॥ 1958 ई0 ॥
दैत्य वंश एवं रावण महाकाव्य पर यहाँ विचार किया जा रहा है.

वाल्मीकि की रामायण से कथानक का आधार ग्रहण कर कवि ने रावण महाकाव्य की रचना की. कवि ने रावण को नायक पद प्रदान किया है. दैत्यवंश के समान ही कवि ने कालिदास के " रघुवंश " एवं माइकेल मधुसूदन के " मेघनाद वध " से प्रेरणा ग्रहण की है. विभीषण के शासन के अन्त के लिए रावण के पुत्र अरिमर्दन की कल्पना तथा उसके द्वारा विभीषण की पराजय एवं स्वाधिकार प्राप्ति के प्रसंग कवि की अपनी मौलिक कल्पना के परिणाम है. ये घटनायें नायक रावण के व्यक्तित्व की महत्ता की प्रतिष्ठा में योग देने वाले हैं. इसमें वीर रस की धारा प्रवाहित होती दृष्टिगोचर होती है. इस प्रकार दोनों कृतियाँ वीर काव्य परम्परा में आती हैं.

लक्ष्मीनारायण मिश्र

लक्ष्मीनारायण मिश्र का जन्म बस्ती आजमगढ़ में सन् 1908 ई० में हुआ. सन् 1939 में काशी विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की. हैदराबाद अन्तर्गत साहित्य परिषद एवं प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन बम्बई सन् 1943 में भारत रक्षा कानून के अंतर्गत आजमगढ़ जेल में बंदी रहे. केन्द्रीय शिक्षा सचिवालय की ओर से महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य के प्रधान नगरों में एक मास का भाषण, काशी नागरी प्रचारणी सभा की ओर से सन् 1962 में आपके साठवें जन्म दिन पर हीरक जयंती का आयोजन किया गया. आप मुख्यतः नाटककार है परन्तु कवि के रूप में भी आपने कार्य किया है आपके काव्य ग्रंथ निम्नलिखित हैं..

" अंतर्जगत "(कविता संग्रह सन् 1924), सेनापति कर्ण (सन 1961) अपूर्ण महाकाव्य.

सेनापति कर्ण

लक्ष्मी नारायण मिश्र ने महाभारत के विशाल कथानक को लेकर महारथी कर्ण का वर्णन किया है. कर्ण के वीरत्व, दानवीर, दयावीर एवं महाभारत के युद्ध का वर्णन मिलता है. इसमें वीर रस की अजस्त्र धारा प्रारंभ से अंत तक प्रवाहित होती है. परन्तु यह कृति अपूर्ण है. अपनी वर्तमान स्थिति में इसे काव्य रूप के दृष्टिकोण से खण्डकाव्य कहा जा सकता है ।

लक्ष्मीनारायण कुशवाहा

इनका जन्म 3 जनवरी सन् 1931 में हुआ. इन्होंने साहित्यरत्न एवं एम० ए० अंग्रजी की शिक्षा प्राप्त की है. " नीरजा " के भूतपूर्व संपादक रहे हैं एवं तात्याटोपे कृति पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार भी

प्राप्त हो चुका है. इनकी प्रकाशित रचनायें निम्नलिखित हैं...

" वेदी के दीप " ﴾गीत﴿, " तात्याटोपे महाकाव्य ﴾2014 वि.﴿, " देंगे खून न देंगे माटी ﴾ राष्ट्रीय कविता ﴿, चूड़े की लाज ﴾ कहानी ﴿ इसके अतिरिक्त अप्रकाशित दो स्फुट रचनाओं के संग्रह ﴿

इनमें से वीर रस का महाकाव्य तात्याटोपे है जिसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है ।

तात्याटोपे

" तात्याटोपे " वीर रस का एक उत्कृष्ट उदाहरण है. कवि ने इतिहास प्रसिद्ध 1857 के प्रथम स्वतंत्रता युद्ध से आधार ग्रहण कर स्वातन्त्र्य महावीर तात्याटोपे के पुण्य चरणों की वंदना की है. कवि ने देशभक्त वीर के साथ-साथ विभीषण के समान देशद्रोही मानसिंह का भी उल्लेख किया है जिसने धन एवं जागीर के लालच में आकर देश की स्वतंत्रता को और पीछे ढकेल दिया. इस मानसिंह ने तो मुगल कालीन मानसिंह का फिर से स्मरण करा दिया. इसमें कवि ने फिर से पौराणिक एवं ऐतिहासिक वीर आत्माओं यथा लंकाविजयी राम, सैल्यूकस विजयी विक्रमादित्य, शक विजयी गुप्त सम्राट, चित्तौड़ के राणा रत्नसेन एवं हल्दीघाटी के विजेता प्रताप का स्मरण कर देश वासियों में नवीन चेतना का संचार किया है. महाकाव्य की इकत्तीस आहुतियाँ सन् 1857 के पावन इकत्तीस मई का ही स्मरण कराती हैं. अंग्रेजों के साथ युद्ध वर्णन बड़े ही सजीव एवं ओजपूर्ण हैं. वास्तव में यह महाकाव्य वीर काव्यों की श्रृंखला में श्रीवृद्धि कर रहा है और कवि का यह प्रयत्न सराहनीय है।

लालधर त्रिपाठी कृत छत्रसाल ﴾2018 वि0﴿
========

" छत्रसाल " महाकाव्य वीर रस की सुंदर रचना है. जिसके कथानक का आधार कवि ने इतिहास से ग्रहण किया है. जिस समय छत्रपति

शिवाजी का यश:सूर्य मध्याह्न में था, उसी समय बुन्देल खण्ड में एक बुन्देला तरुण उसी आदर्श को अपने मन में संजो रहा था, जो आदर्श शिवाजी का था. और यह तरुण था छत्रसाल . यह एक बुंदेला जागिरदार के पुत्र थे एवं जिन परिस्थितियों के बीच रहकर शिवाजी उत्कर्ष पर पहुँचे थे, उन्हीं परिस्थितियों के बीच छत्रसाल का भी विकास हुआ था. कवि ने स्वधर्माभिमानी, साहसी और वीर के रूप में छत्रसाल को चित्रित किया है. कवि ने इस महाकाव्य का प्रारंभ छत्रसाल की शिवाजी से मिलने जाने वाली यात्रा से होता है. कवि ने छत्रसाल के दरबारी कवि " लाल " को भी एक युद्ध में तत्कालीन परिपाटी के अनुसार सैनिकों को प्रोत्साहन देते हुए युद्ध भूमि में दिखाया है. कवि ने स्वयं स्वीकारा है ..

" अपने काव्य के लिए ऐतिहासिक सामग्री एकत्र करने में श्री गोरेलाल तिवारी के बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, जो नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित है, और महान् कवि लाल के " छत्रप्रकाश " से मैंने प्रमुख रूप से सहायता ली है । " [28]

केदारनाथ मिश्र " प्रभात "

केदारनाथ मिश्र " प्रभात " का जन्म 11 सितम्बर 1907 ई० में हुआ. इन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण कर विविध विद्योपाधियों से भी अलंकृत किये गये. विभिन्न संस्थाओं ने इन्हें अभिनन्दित किया. ये हमेशा विभिन्न परिस्थितियों से अलग रहकर साहित्य सृजन में लगे रहे हैं. इनकी रचनाओं में मन-मस्तिष्क और हृदय प्राण की सम्पूर्ण पवित्रता दृष्टिगोचर होती है. एक सांस्कृतिक सूत्रधार होते हुए भी छायावाद के अभ्युदय औत्कर्ष्य का दीप स्तम्भ हैं. ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चुनौती देते हुए " ज्वाला " के स्वरों में सशस्त्र क्रान्ति का इन्होंने अभियान किया. 11 सर्गों का एक सम्पूर्ण काव्य प्रबन्ध मुक्त

वृत्त में लिखकर छंदोबद्ध रचना की परम्परा को तोड़ा, अब तक प्रकाशित इनकी रचनायें निम्नलिखित हैं।

" कलेजे के टुकड़े " ﴾ मुक्तक 1929 ई0﴿, " ज्वाला ﴾ सशस्त्र क्रान्ति की कवितायें ﴿, " जब्त " ﴾1929 ई0﴿, " श्वेतनील " ﴾प्रेम गीत 1936 ई0﴿, कलापिनी " ﴾ प्रेम गीत 1939 ई0﴿, " कंपन " ﴾ दार्शनिक गीत 1942 ई0﴿, " अर्पण ﴾दार्शनिक गीत 1942 ई0﴿, संवर्त " ﴾ गीतिनाट्य 1944﴿ " काल दहन ﴾ गीति नाट्य 1946 ई0﴿, " कर्ण " ﴾खण्डकाव्य 1950 ई0﴿, " चिर स्पर्श ﴾ आध्यात्मिक गीत 1951 ई0﴿, " स्वर्णोदय " ﴾ गीति नाट्य संग्रह 1951 ई0﴿, " कैकयी ﴾ महाकाव्य 1951 ई0 ﴿, " तप्त गृह " ﴾ प्रबन्ध काव्य 1951 ई0﴿, ऋतंवरा " ﴾ महाकाव्य 1957 ई0 ﴿, " पहिए की धुरी " ﴾ साहित्यिक निबंध 1959 ई0 ﴿, बैठो मेरे पास " ﴾ चतुष्पदियाँ ﴿ 1960 ई0﴿, समुद्यत राष्ट्र ﴾ झण्डागीत 1964 ई0 ﴿, " सेतुबंध,राष्ट्र पुरूष ﴾1967﴿, ﴾कविता संग्रह ﴿,1968﴿, " शुभा ﴾ गीत संग्रह ﴿1967 ई0﴿, " सत्यं शिवं सुन्दरं " ﴾ बच्चों के पत्र ﴿ 1953 ई0 " प्रवीर " ﴾खण्डकाव्य ﴿ 1970 ई0 , प्रतबद्ध ﴾ खण्डकाव्य ﴿ 1971 ई0 .

इन काव्य कृतियों में से वीर रस की रचनायें कर्ण हैं. जो हमारे विवेच्य काल के विषय में आता हैं. इनका वर्णन यहाँ अभीष्ट है. यद्यपि ज्वाला भी सशक्त क्रान्ति की कवितायें हैं परन्तु कवि की यह कृति जब्त हो चुकी है ।

कर्ण

केदारनाथ मिश्र " प्रभात " का यह खण्डकाव्य वीर रस की अद्वितीय कृति है. इसकी कथावस्तु नयी नहीं है. महावीर कर्ण का जीवन महाभारत की सबसे बड़ी घटना है. प्रथम इस खण्डकाव्य में 6 सर्ग ही थे, परन्तु इस नवीन 1968 के संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण में एक सर्ग

ओर जोड़ दिया गया है । 29 कर्ण के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु और अंत में युधिष्ठिर द्वारा अग्रज की स्मृति में जलदान देना एवं अश्रु बहाना दृष्टिगोचर होता है. कवि ने कर्ण के वीरत्व, साहस, दानवीरता, धर्मवीरता, पौरुष, दम्भ आदि गुणों से विभूषित किया है. युद्धभूमि में उसकी रण कुशलता का वर्णन कवि ने बड़ी ही ओजपूर्ण भाषा में किया है. वास्तव में यह वीर रस की अनमूल्य कृति है.

जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद

जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द का जन्म 1907 ई० मुरार, ग्वालियर में हुआ. प्रारंभिक शिक्षा मुरार में ही प्राप्त की और उसके बाद काशी विद्यापीठ में साहित्य, इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया. हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के अतिरिक्त स्वाध्याय से उर्दू, मराठी तथा बंगला और गुजराती भाषाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया. विश्वभारती, शान्तिनिकेतन तथा महिला आश्रम वर्धा में अध्यापन किया. प्रयाग और अजमेर में साहित्य एवं राजनीतिक कार्य सम्पन्न किए. पंजाब में लाहौर की मासिक पत्रिका " भारती " तथा अर्ध साप्ताहिक पत्र " जीवन " के सम्पादक रहे.

कांग्रेस एवं समाजवादी पार्टी में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे. सन् 1942 के आंदोलन में एवं बाद में भी जेलों में रहे. इस समय आप निष्पक्ष पत्रकार के रूप में कार्य करते हुए अध्ययन और साहित्यिक निर्माण में संलग्न हैं. " मिलिन्द " जी ने सन् 1923 के लगभग काव्य रचना प्रारंभ की. सन् 1929 में अपनी जन्मभूमि मुरार के कुछ विद्यार्थीओं के आग्रह पर " प्रताप प्रतिज्ञा " नाटक की रचना की . इसमें केवल पुरुष पात्रों को लेकर महाराणा प्रताप के मुगल सम्राट अकबर से राजनीतिक संघर्ष का चित्रण है.

मिलिन्द जी के काव्य संग्रह निम्नलिखित हैं....

" जीवन संगीत " (1940 ई0), " नवयुग के गान " (1948 ई0), " बलि पथ के गीत " (1950 ई0).

इन तीनों संग्रहों में से " बलि पथ के गीत " में वीर रस की कवितायें संग्रहीत है इसलिए यह हमारे विवेच्य काल का विषय बन सकती है. इनका विवेचन यहाँ द्रष्टव्य है.

कवि के इस संग्रह में अगस्त 1942 से अगस्त सन् 1949 तक की चालीस कविताएँ संग्रहीत हैं. इसमें कवि ने विभिन्न परिस्थितियों से गुजरे देश का चित्रण किया है. इस संग्रह को कवि ने साधना पथ, बापू, किसान, ज्योतिकण, कला प्रकृति दर्शन, कारा की दीवारों में, क्रान्ति को इतिहास के क्षण, दासता की वेदना के स्वर, श्रद्धा सुमन, स्वतंत्रता के बाद और समता की ओर इन ग्यारह खण्डों में विभाजित किया हैं. कवि ने गांधीवादी अहिंसात्मकता को लेकर " बापू के आँसू ", " विश्व ज्योति गांधी ", " गांधी जयन्ती पर " , कविताओं की रचना की है. वर्ग संघर्ष से उत्पन्न स्थिति को लेकर " किसान से ", " किसान की ज्योति " रचनायें रचीं. वीर रस की रचनायें रचीं अधिक हैं. जिनमें वीरता एवं बलि होने का संदेश कवि ने दिया है. " कैदी और क्रान्ति ", " दीपक का नव जीवन ", " अगस्त क्रान्ति का गीत ", " विद्रोही " , " विप्लव और विधान ", " तरुण के प्रति ", " तरुण के प्रति ", " दिल्ली में हलचल क्या है ? " आदि रचनायें वीरत्व से ओतप्रोत है. परतंत्रता पर कवि ने आत्मग्लानि भी " परतन्त्रों का आत्मनिरीक्षण ", " परतन्त्र भारत की आत्मग्लानि " के रूप में दर्शायी है. देश के वीरों एवं नेताओं को श्रद्धा के सुमन चढ़ाता हुआ कवि नेताजी "सुभाष की स्मृति ", " शहीद का विधवा से ", " राष्ट्रवीरों के स्वागत में " की रचना करता है. इन कविताओं के

सम्बन्ध में कवि स्वयं स्वीकार करता है..

" पिछले वर्षों में मेरे जीवन और विचारों को जिन संघर्षों और चिन्तन क्रान्तियों में विनम्र किन्तु सक्रिय भाग लेना पड़ा, उनसे सम्बन्ध भावनाओं और कल्पनाओं ने मेरे हृदय को बरबस अभिभूत किया और हृदय पर जो भावनायें छा जाती हैं, उनकी अभिव्यक्ति करने को हृदय विवश हो ही जाता है. इस भावना-विवशता में कविता की एक अदम्य प्रेरणा निहित होती है।"[30]

विवेच्य काल में जहाँ नये-नये प्रयोग, मार्क्सवाद, स्तालिनभेद एवं वैषम्य पर रचनायें हो रही थीं, उस समय भी श्रीकृष्ण सरल, आनन्द कुमार, विश्वनाथ पाठक, श्यामनारायण प्रसाद, लक्ष्मीनारायण कुशवाहा, केदारनाथ मिश्र " प्रभात " इत्यादि कवि एवं दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, श्याम नारायण पाण्डेय जैसे कवि किसी वाद विशेष विवाद में न पड़ कर स्वतंत्र रूप से काव्य रचना करते हुए वीर काव्यों की परंपरा को आगे बढ़ाते रहे. इस काल खण्ड में दो दो विदेशी आक्रमण भी हुए जिन्होंने इस प्रकार की रचनाओं के सृजन की प्रेरणा दी. दोनों कालखण्डों की तुलना में इस कालखण्ड ने वीर रस के सबसे अधिक महा-काव्य एवं खण्डकाव्य साहित्य को दिये. इसमें सरदार भगत सिंह, अंगराज, झांसी की रानी, रावण, तात्याटोपे, छत्रसाल, अशोक महाकाव्य एवं प्राणार्पण, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, जय हनुमान, तुमुल, गोरावध, सूलि और शान्ति ", रणचण्डी, सिंहद्वार, राष्ट्र पुरुष, कर्ण, भीष्म प्रतिज्ञा जैसे वीर रस के खण्डकाव्य प्रदान किये . इनमें से सूलि और शान्ति भारत पाक युद्ध पर आधारित हैं तो दिनकर की परशुराम की प्रतीक्षा भारत चीन युद्ध को आधार बना लिखी गयी है. महाकाव्य और खण्डकाव्यों के अतिरिक्त अनेक मुक्तक रचनायें भी प्रकाश में आयीं. इनमें कुछ सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राजनीतिक परिस्थितियों एवं विदेशी आक्रमणों से प्रेरणा प्राप्त कर लिखी गयी हैं जिनमें मुख्य चेतना देशभक्ति, राष्ट्रीय एवं बलिदान की भावना की है. इस प्रकार समग्र रूप से देखा जाये तो

वीर रस की सबसे अधिक रचनायें इसी काल में प्रकाश में आयीं जो हिन्दी काव्य की समकालीन काव्य चेतना और पूर्ववर्ती परम्परा में अपनी निजी विशेषताओं के साथ एक सशक्त काव्यधारा को रूपाकार देती है.

समग्रतया मूल्यांकन

इस अध्याय में 1920 से लेकर 1965 तक आने वाले कवियों एवं उनकी कृतियों का जो मूल्यांकन किया गया है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि इस कोटि में आने वाले वीर काव्यों की प्रधान चेतना पौराणिक एवं ऐतिहासिक रही है. काव्य रूप के दृष्टिकोण से ये रचनाएँ चार प्रकार की हैं. महाकाव्य, खण्डकाव्य, लघु आख्यानक काव्य एवं मुक्तक.

युगीन परिप्रेक्ष्य में देखें तो इस काल में आत्म गौरव , स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, वीरता के भाव आदि जगाये गये. सत्याग्रह आन्दोलनों के अतिरिक्त इस युग में जन साधारण को प्रेरणा क्रांतिकारियों आतंकवादियों के प्रयत्नों से भी मिली जिसकी अभिव्यक्ति साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में की. इससे प्रेरणा ग्रहण कर कई ऐतिहासिक महाकाव्य इस युग में प्रकाश में आये जिनकी संख्या पौराणिक महाकाव्यों से लगभग दुगुनी है.

सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने भारत की सांस्कृतिक परम्परा तथा इतिहास के गौरवमय पृष्ठों से प्रेरणा देने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया था उसीसे प्रेरणा ग्रहण कर अनेक वीर काव्य लिखे गये. इन वीर काव्यों में उन्हीं लोगों को कवि ने नायक पद देने का कार्य किया है जिनके नामोल्लेख से ओज एवं वीरत्व की सृष्टि होती है. यदि तुलना की जाय तो इस युग में लिखे गये पौराणिक महाकाव्य संख्या में ऐतिहासिक महाकाव्यों से कम हैं. जिनमें से इस युग में लिखे गये वीर रस के महाकाव्य लगभग पन्द्रह हैं.

दूसरी प्रकार की रचनायें खण्डकाव्य हैं जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण, क्रान्तिकारियों के प्रयत्नों एवं युगीन परिस्थितियों से प्रेरणा प्राप्त कर ही प्रकाश में आयीं. पौराणिक कथानकों पर आधारित रचनायें धार्मिक- सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित होकर लिखी गयीं हैं, जैसे जयहनुमान, तुमुल, शक्ति इत्यादि. आलोच्य काल में प्राप्त होने वाले खण्डकाव्य लगभग सत्रह हैं. जिनमें से अधिकतर पौराणिक कथानकों को आधार बनाकर लिखे गये हैं, शेष सभी ऐतिहासिक हैं. पौराणिक तथा ऐतिहासिक खण्डकाव्यों की यदि परस्पर तुलना की जाये तो ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित काव्य कहीं अल्प हैं.

तीसरे प्रकार की रचनायें लघु अख्यानक काव्य हैं जिनमें मुख्य शिवाजी का पत्र, राम की शक्ति पूजा, सरदार चूड़ावत, कुन्ती और कर्ण, परशुराम की प्रतीक्षा, पेशोबा की प्रतिध्वनि, प्रलय की छाया एवं शेर सिंह का शस्त्र समर्पण है. ये लघु अख्यानक काव्य कथासूत्र की दृष्टि से खण्डकाव्य की कोटि में रखे जा सकते हैं परन्तु ये खण्डकाव्य नहीं हैं. मुक्तकों की कोटि में भी नहीं आ सकते क्योंकि ये उनसे लम्बी कथा से सम्बन्धित होते हैं. ये लघु अख्यानक काव्य भी पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित हैं. जिनमें ऐतिहासिक वीरोन्मेष अधिक मात्रा में है. इनमें वीरत्व, देश प्रेम एवं बलिदान की भावना दृष्टिगोचर होती है ।

चतुर्थ कोटि में मुक्तक रचनायें आती हैं. ये वीर रस की मुक्तक रचनायें सांस्कृतिक पुनर्जागरण, क्रांतिकारियों के प्रयत्नों, राजनीतिक परिस्थितियों, गांधी की अहिंसक चेतना एवं वैमनस्य से उत्पन्न परिस्थितियों से प्रेरणा ग्रहण कर लिखी गयी हैं. इनमें यद्यपि युद्धवीर पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलते तथापि कर्मवीर पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं. इनमें मुख्यतः बलिदान की भावना, देश प्रेम, वीर पूजा

आदि चेतना बलवती है. ऐसी मुक्तक रचनाओं के वीर रस से ओतप्रोत लगभग 23, 24 मुक्तकों संग्रह मिलते हैं ।

इस प्रकार यदि समग्र रूप से देखा जाये तो हम कह सकते हैं कि इस युग में रचित वीरकाव्यों की एक सशक्त परम्परा प्रकाश में आती है, जिसमें सभी प्रकार के काव्य-रूपों के साथ-साथ विषय वैविध्य भी है. एक उल्लेखनीय तथ्य है कि इनमें युगीन-चेतना भी अपनी समग्रता के साथ अंकित हुई है जिस पर प्रसंगानुसार परवर्ती अनुशीलन में विचार किया जायेगा.

विवेचन सुविधा के विचार से इन कृतियों का काव्य रूपों के आधार पर वर्गीकरण करके मूल्यांकन उपयुक्त होगा जिससे इस काव्य-चेतना के प्रदेय को उचित न्याय दिया जा सके. जैसाकि पूर्ववर्ती विवेचन से स्पष्ट है कि इस लम्बे काल खण्ड में महाकाव्य, खण्डकाव्य, लघु-आख्यानक काव्य तथा मुक्तक सभी प्रकार के काव्य रूप मिलते हैं. अतः सर्वप्रथम वीर काव्यों की कोटि में आने वाले महाकाव्यों का विवेचन किया जायेगा ।।

संदर्भ सूची

1. माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :
2. सरस्वती : जून 1960, पृ . 377.
3. विशाल भारत, जून 1960, पृ. 473.
4. सरस्वती, जून 1960, पृ. 378-79.
5. डॉ० नगेन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध, पृ. 158.
6. एक कवि एक देश, संपादक- डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी , विवेचन पृ. 291.
7. वही , पृ. 293.
8. जानकारी कवि के निकट सम्बन्धियों से प्राप्त की.
9. श्यामलाल गुप्त पार्षद विरचित, झण्डा ऊँचा रहे : सम्पादक - सोहनलाल द्विवेदी, पृ. 55
10. वही, पृ. 64.
11. धर्मयुग, 15 जुलाई 1973, पुरस्कारों और लेखकीय स्वतंत्रता के सवाल पर दिनकर से दो टूक बातचीत, पृ. 13.
12. दिनकर, प्रणभंग तथा अन्य कविताएँ, भूमिका.
13. दिनकर , इतिहास के आँसू, पृ. 19.
14. हंस : प्रेमचन्द 1932 आत्मकथा अंक.
15. धर्मयुग, 7 मार्च 1976, मिला तेज से तेज : एक परिचयात्मक समीक्षा, श्रीकान्त जोशी, पृ. 18.
16. वही, पृ. 18.
17. सुधा चौहान, मिला तेज से तेज, पृ. 112.
18. गुरुभक्त सिंह भक्त : विक्रमादित्य, प्रस्तावना
19. डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित : आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि, शिव मंगल सिंह सुमन, पृ. 5.

20. डॉ० के० जी० कदम : श्यामनारायण पाण्डेय व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- अप्रकाशित.
21. बंगाल के प्रति तथा अन्य कवितायें.
22. कवि का पत्र.
23. श्री कृष्ण सरल : सुभाषचन्द्र, पृ. 3.
24. वही, पृ. 9.
25. वही, पृ. 10.
26. वही, पृ. 13.
27. सरदार भगतसिंह : प्रकाशक का वक्तव्य.
28. लालधर त्रिपाठी " प्रवासी " छत्रसाल [काव्य विषयक वक्तव्य] पृ. 7.
29. " प्रभात " कर्ण, नवीन संस्करण की भूमिका.
30. जगन्नाथ प्रसाद " मिलिन्द " : बलि पथ के गीत [आरम्भ] पृ. 4.